पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से
अनन्तराम और साठे के
सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय,—देहली में मुद्रित ।

# निवेदन

ज्ञान विद्या को कहते हैं। विद्या पाना किसे पसन्द नहीं है? ज्ञान की महिमा इतनी अधिक है कि स्त्री, पुरुष की तो बात ही क्या लेकिन ज्ञानवान् तालीम पाया हुआ तोता भी बहुत कीमती समझा जाता है। जैनशास्त्र में ज्ञान की बड़ाई बहुत वर्णन की है। ज्ञान की प्राप्ति ही से भलाई या बुराई का पता लग सकता है। ज्ञान के सिवाय दुनियादारी के मामलों में भी पैर २ पर ठोकर खानी पड़ती है। ज्ञान और क्रिया दोनों ही से मोक्ष प्राप्ति हो सकती है। ज्ञान की हर तरह से बड़ाई करने और आराधना करने के लिए जैनशास्त्र में अनेक विधि विधान लिखे हुए हैं। तप करके, पूजा-पाठ करके, खुद मिहनत करके और दूसरों को शक्तिभर मदद पहुंचा करके ज्ञान के प्रति अपनी भक्ति दिखाई जा सकती है। जो पढ़ते लिखते हैं वे खुद ज्ञान को हासिल कर उससे फायदा उठाते और उसे बढ़ाते हैं। परन्तु बहुत भाई या बहिनें ऐसे भी हैं जो पढ़ते लिखते भी हैं या कम पढ़े लिखे हैं या बिलकुल पढ़े लिखे नहीं हैं वे भी ज्ञान के प्रति अपनी बहुत ज्यादा रुचि रखते हैं। ऐसे साधर्मिक लोग ज्ञानपंचमी का व्रत करते हैं। दूसरे दूसरे प्रकार

की तपस्या-ओली आदि करते हैं. ज्ञान की पूजा करते हैं। ज्ञान के उपकरणों की. साधनों की जैसे-ठवणी. पुस्तक आदि की पूजा करके अपनी ज्ञान रुचि प्रकट करते व बढाते हैं। कुछ मोटे विचारवाले पढ़े-लिखे जल्दी कह देते हैं कि " बाहरी आडम्बर तो बढ़ गया है पर ज्ञान प्राप्ति के लिये उतनी कोशिश नहीं की जाती " । उनके इस कथन में कुछ सत्य अंश है सही पर इससे बाहरी क्रिया जप. तप, पूजा. आराधन आदि निष्फल सिद्ध नहीं होते; क्योंकि अनेक भाई या बहिनों ने इस बाह्य क्रिया से भी ज्ञान का गौरव ज्यों का त्यों बना रक्खा है। अगर ऐसी क्रियायें न होतीं तो आज तक अपढ़ लोगों में भी जो ज्ञान की भक्ति. ज्ञान का गौरव और ज्ञान की रुचि देखी जाती है सो कभी सम्भव नहीं था । असल में स्त्रियों ने अपनी दृढ़ता व भक्ति के द्वारा धर्म को बचाये रखने में ज्ञान की महिमा बनाये रखने में बड़ी मदद पहुंचाई है । इससे हम ज्ञान के वास्तविक प्रयत्न को चाहते हुए भी उसकी बाह्य आराधना आदि को आदर-दृष्टि से देखते हैं । अनेक लोगों को ज्ञान की थापनाविधि आदि में बहुत अड़चन आती थी क्योंकि वे लोग विधि न जानने के कारण और ऐसी अनुकूल किताब न होने के कारण थोड़ी २ बात के लिए पराया मुंह देखते थे;

यह बात हमें और इस पुस्तक की छपाई में मदद देनेवालों को खटकी, इसलिये मंडल की ओर से यह पुस्तक छपाकर प्रकट की जाती है । इस में ज्ञान की थापनाविधि के अलावा और भी विषय भक्तिवालों के लिये उपयोगी है । इसमें अनेक अच्छे अच्छे स्तवन, सज्झाय, गरभा आदि हैं जिन का पता विषयानुक्रम से लग जावेगा सब लोग विज्ञान, साहित्य, न्याय, तर्क आदि के अधिकारी नहीं होते, जो शुरू २ के अधिकारी और भक्तिवाले हैं उनके लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है, खास कर स्त्रियों के लिये इस पुस्तक की छपवाई में स्त्रियों ही ने चन्दा कर मदद दी है इस से यह सिद्ध है कि उन्हें ऐसी पुस्तक की ओर कितनी रुचि है । मंडल जिस प्रकार बड़े २ और गूढ़ ग्रन्थों को छपाकर अपना कर्तव्य पाल रहा है वैसे ही ऐसी छोटी २ किताबों की ओर भी उस का ध्यान रहता है । मंडल अपना यह कर्तव्य समझता है कि " सब अधिकारियों के लिये उन की योग्यता के अनुसार उपयोगी हो सके, ऐसी किताबें छपाना और सुलभ करना" ।

हम सब को आशा दिलाते हैं कि वे लोग मंडल को उपयोगी समझकर उसकी कार्रवाई को पसन्द करेंगे तो यह मंडल कुछ रोज में विशेष काम कर दिखलावेगा । इस पुस्तक की

छपवाई में जिन्होंने मदद दी है उनके नाम धन्यवाद के साथ नीचे लिखे जाते हैं:—

बाबू रतनलालजी की बहू, मिरजापुर।

बाबू देवीप्रसादजी की बहू, बनारस।

बाबू लाभचन्द्रजी की माता, बनारस।

बाबू निहालचन्द्रजी की बहू, बनारस।

बाबू मानकचन्द्रजी की बहू बनारस।

बाबू मोहनलालजी चौरड़िये की बहू, बनारस।

बाबू आनन्दचन्द्रजी चोपड़े की बहू, कलकत्ता।

आगरा

आपका—

मन्त्री

# विषयानुक्रम

ओं नमोनमः श्रीगौतमस्वामिने ।

# अथ ज्ञानथापने की विधिः

प्रथम पवित्र जगह में चौकी के ऊपर ज्ञान की स्थापना करणी पीछे मुंह आगे पांच साथीया करणा पांच फल पांच नैवेद्य पांच फूल पांच दीपक करणा पीछे गाथा पढणी ।

अथ गाथा—नमन्ति सामन्त महीवनाहं,
देवाय पूयं सुविहेय पुब्विं ।
भत्तियष्चित्तंमणिदामएहिं,
मन्दारपुप्फ पसवेहिनाणं॥१॥
तहेवसढा मणि मुत्तिएहिं,
सुगन्धपुप्फेहि वरंसि एहिं ।
पूयंति वदन्ति नमन्ति नाणं,
नाणस्सलाभायभवरकयाय॥२॥

ज्ञान वासक्षेप से पूजणा। प्रथम यह कहके पूजा करणी। पीछे इच्छा कारेण सन्दिसह भगवन् चैत्य वंदन करु' पांचो शक्रस्तवे देव वंदन करना ॥

इति ज्ञान थापना करण की विधिः।

---

## अथ ज्ञानकोचैत्य वन्दन।

सकल वस्तु प्रतिभास भानु' निरमल सुख कारण, सम्यग् दर्शन पुष्ट हेतु भव-जल निधि तारण॥ संयम तप आनंद कंद अज्ञान निवारण। मार विकार प्रचार ताप तापित जन ठारण॥ १ ॥ श्याद्वाद परिणाम धर्म परिणति पड़िबोहण। साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहन॥

मोह तिमिर विध्वंस सूर मिथ्यात्वपणा-
सण । आतमशक्ति अनन्त शुद्ध प्रभुता
परगासण ॥ २ ॥ मतिश्रुति अवधि वि-
शुद्ध नाण मनपर्यवकेवल भेदपचास
क्षायोपसमिक एक क्षायक निर्म्मल ॥ दोय
परोक्ष प्रथम तिहां दुगपरतक्षदोसन्त ।
सकल प्रत्यक्ष प्रकासभास ध्रुव केवल अ-
परमित्त ॥ ३ ॥ धर्म सकल नो मूल शुद्ध
त्रिपदी जिन भाषे । वाहिर अंग प्रधान
खंध गणधर सुप्रकासे ॥ शाखा श्रीनिर्यु-
क्ति भाष्य पडि शाखादीपै । चूरण टीका
पत्र पुष्फ संशय सब जपै ॥ ४ ॥ एपं-
चांगी सारबोध कह्यो जिन पंचम अंगे ।
नंदी अनुयोग द्वार शाखें मानो मनरंगे ॥
वीर परमपद जीत अनुभव उपगारी ।

अभ्यासी आगम अगम निरुपम सुख-
कारी ॥ ५ ॥ मोह पंक हरनीरसम सिद्धा-
न्त अबाधे । देवचन्द्र आणा सहित नय
भंग अगाधे ॥ ए श्रुतज्ञान सुहामणो
सकल मोक्ष सुखकंद । भगते सेवो भवि-
कजन पामो परमानन्द ॥ ६ ॥

इति ज्ञानपदकोचैत्य वंदन ।

---

## अथ प्रथमअंगआचारांग जी का स्तवन ।

पहिलो अङ्ग सुहामणो रे लाल । अ-
नुपम आचारांग रे ॥ सुगणनर० ॥ वीर
जिणन्देभाषियो रे लाल । उववाइ जास
उवंग रे ॥ सुगणनर० ॥ १ ॥ बलिहारी
ए अङ्गनी रे लाल । हुं जाउं बारंवार रे ॥

सुगणनर० ॥ विनय सु गोचरि आदरेरे लाल । जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु-गणनर० ॥ २ ॥ वलि० ॥ सुयखन्ध दोय छे जेहनारे लाल । प्रवर अध्ययन पच-वीस रे ॥ सुगण० ॥ उद्देशादिक जाणीये रे लाल । पंच्यासी सुजगीसरे ॥ सुग० ३॥ वलि० ॥ हेत जुगत करी सोभतारे लाल। पद अट्ठारे मझाररे ॥ सुग० ॥ अक्षर पदने छेहड़ेरे लाल । संख्याता श्रीकार रे। सुग० ॥४॥ वलि० ॥ गमा अनंता जेह मारेलाल। वली अनन्त पर्याय रे ॥ सुग० ॥ त्रसपरित-त्तोछे इहांरे लाल । थावर अनन्त कहायरे। सुग० ॥ ५ ॥ वलि० ॥ निषध निकाचित सासता रे लाल । जिन परणित ए भावरे॥ सुग०॥ सुणता-आतम उल्लसे रे लाल। प्रगटे

सहिज स्वभाव रे ॥ सुग० ॥ ६ ॥ बलि० ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविका रे लाल । अंगे धरिय उच्छाह रे ॥सुग०॥ विधि पूर्वक तुम सांभलो रे लाल । गीतारथ गुरु पासरे॥सुग० ॥ ७ ॥ बलि० ॥ ए सिद्धांत महिमानिलो रे लाल। उतारे भव पार रे ॥ सुग० ॥ विनय चन्द्र कहे माहरो रे लाल । एहिज अङ्ग आधार रे । सुगणनर०॥ बलिहारी ए अङ्ग नीरे लाल। हुं जाउं बारंबार रे ॥सुगणनर०॥ बलिहारी निज अंगनीरे लाल ॥ ८ ॥

इति प्रथम अंग आचारांग जी
का स्तवन सम्पूर्णम् ॥

# अथ श्रुतज्ञानकोस्तवन ।

श्रुत अति हो भलो संघ सकल आधार। नमुं त्रिभुवन तिलो ॥ए आंकणी॥ अरथे श्री वीरजिनंद भाख्यो सूत्रे श्री गणधर गुरु भाख्यो ॥ तदु भयथीते मुनिवर राख्यो ॥ श्रुत० ॥१॥ जेहथी जग भाव सकल जाणे नय एकांत मुनिजन नवीताणे ॥ निश्चय व्यवहार ते मन जाणे ॥ श्रुत० ॥२॥ जिहां अंग उपांगछे अति रूडा छ छेद पयन्नानविकूडा ॥ मूल सूत्र नन्दी अनुयोग चूडा ॥श्रुत०॥३॥ जिहां निर्युक्ति सूत्र संगेवली भाष्य चूर्ण टीका संगी ॥ पंचम अंगे कही पंचांगी ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहिये संवेग परम वलि सर

दहिये ॥ इन त्रण विन भव मारग ना कहिये ॥ श्रुत ॥०५॥ जेहनी अनुपेहानित करिये उपचारे इन्द्रासन परि हरीये ॥ आराधया निज अनुभव वरिये ॥ श्रुत० ॥ ६ ॥ जिन आगमना जे गुण गावे श्रद्धाश्रय जे मनमां ध्यावे ॥ ते क्षमा कल्याण सदा पावे ॥ श्रुत अतिहि भलो संघ सकल आधार नमु त्रिभुवन तिलो ॥ ७ ॥

॥ इति श्रुत ज्ञान का स्तवन सम्पूर्णम् ॥

---

## अथ स्तवन ।

जिणंदा थारी वाणी ए मन मोह्यो ॥ जिणंदा० ॥ आंकणी ॥ वाणी गाजे अंबरनाद भाजे दुरवादीनाबाद टाले आतुरना विषवाद सुणतां भाजे भय उनमा-

दरे ॥ जिणंदा० ॥ १ ॥ वाणी मीठी अंबरनाद हारी साकर दाख विसार मोह्या स्वर्ग मृत्यु पाताल अरथे भेट्या-बाल गोपाल रे ॥ जिणंदा० ॥ २ ॥ एतो द्रष्ट जोगनी माय एथी संदेह मनना जाय एथी छूटे विषय कषाय एहने ध्यातां अक्षय पद थायरे ॥ जिणंदा० ॥ ३ ॥ वाणी भाखे श्री जगदीश सूत्रे गुन्थ्या गणना ईश यामें भरीया गुण पैंतीस निसुणी धूने कोई न सीसरे ॥ जिणंदा० ॥ ४ ॥ रसवती चाखैजेनरकंत आणे भवनो ते हिज अन्त तेहने पातिक न रहे अन्त प्रेमें भाखे इम कवि कंतरे ॥ जिणंदा० ॥ ५ ॥

॥ इति स्तवन संपूर्णम् ॥

---

# अथ स्तवन ।

वरसत वचन झरी हो सुगुर मेरे वरसत वचन झरी ॥ आंकणी ॥ अद्भुत ज्ञान गगन ते प्रगट्यो, ज्ञान घटा गहरी ॥ हो सुगुरु० ॥ स्याद्वादनय बिजुरी चमकत, देखत कुमत डरी ॥ हो सुगुरु० ॥ १ ॥ अर्थ विचार गुहिर ध्वनि गर्जत, रहत न एक घड़ी ॥ हो सुगुरु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढ़ी अति जोरे, शुद्ध स्वभाव भरी ॥ हो सुगुरु० ॥२॥ सुभर भर्यो समता रस सागर, समकित भूमि हरी ॥ हो सुगुरु० ॥ ३ ॥ प्रगटे फुनिअंकूरे चिहुं-दिश, पाप जवास जरी ॥ हो सुगुरु० ॥ चातक मोर पपइया भविजन बोलत भक्ति भरी ॥ हो सुगुरु० ॥ दया दान व्रत संयम

सेति, भविक किसान करी ॥ हो सुगुरु० ॥ ४ ॥ हरखचन्द सुरनर शिव सुख कर, सहज स्वभाव फली ॥ हो सुगुरु० ॥ ५ ॥

॥ इति स्तवन संपूर्णम् ॥

---

## अथ ज्ञानपँचमी का स्तवन ।

पंचमी तप तुमे करोरे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञानरे ॥ पहिले ज्ञानने पीछे कीरिया, नहिं कोई ज्ञान समानरे ॥पंचमी०॥१॥ नंदी सूत्र में ज्ञानवखाण्यो, ज्ञानना पंच प्रकाररे ॥ मति श्रुति अवधि अनेमन पर्यव, केवल ज्ञान श्री काररे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अट्ठाविस श्रुत चवदेविस, अवधि छे असंख्य प्रकाररे ॥ दोय भेदे मनपर्यव दाख्यो, केवल एक प्रकाररे ॥

पंचमी० ॥ ३ ॥ चन्द्र सूर्य्य ग्रह नक्षत्र तारा, तेसूँ तेज अकासरे ॥ केवल ज्ञान समो नहिं कोई, लोका लोक प्रकाशरे ॥ पंचमी० ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने। माहरी पुरो उमेदरे ॥ समय सुन्दर कहे हुंपिणपामु, ज्ञाननो पंचमो भेदरे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ इति ज्ञान पंचमी का स्तवन संपूर्णम्

---

## अथ श्रीमांगलिक लिख्यते।

हम घर मंगलिक तुम घर मंगलिक मङ्गलिक चतुर्विध संघतणा एह० ॥ सिंघासन बयठी माता मरुदेव्याजी बोलैं, जिन घर ऋषभदेवजी जन्मथाए ॥ ऋषभदेव जी जन्म्या बड़ो फलपायो रूड़ो फलपायो

जिनदेव जुगलाधर्म निवारिया एह० ॥१॥ सिंहासन वयठो माता विजयादेवी बोलैं जिनघर अजितनाथजी जनमियां रे॥ वड़ोफल पायो रूड़ो फलपायो जिनदेव धर्म प्रकाशिया एह० ॥ २ ॥ सिंहासन वयठी माता सेनादेवो वोलै, जिन घर सम्भवनाथजी जनमियारे, वड़ा फल-पायो रूड़ो फलपायो जिनदेव कर्म खपाविया एह० ॥ ३ ॥ सिंहासन वयठी माता सिद्धार्थादेवी वोलैं, जिनघर अभि-नन्दन स्वामि जनमियारे,वड़ा फल पायो रूड़ो फलपायो जिनदेव दुःख निवारिया हए० ॥ ४ ॥ सिंहासन वैठी माता सु-मंगलादेवी वोलैं, जिन घर सुमतिनाथ जी जनमियारे, वड़ा फल पायो रूड़ाफल

पाये जिनघर सुमति कराविया एह०॥५॥ सिंहासन बयठी माता सुसीमादेवी बोलैं, जिनघर पद्म प्रभू जी जनमियांरे, बड़ो फलपायो रूड़ो फल पायो जिनदेव सुख कराविया एह० ॥ ६ ॥ सिंहासन बयठी माता पृथ्वीदेवी बोलैं, जिनघर सुपार्श्व-नाथजी जनमियांरे बड़ो फलपायो रूड़ो फलपायो जिनदेव दुःख निवारिया एह० ॥७॥ सिंहासन बयठो माता लक्ष्मणादेवी बोलैं, जिनघर चन्द्रप्रभू जी जनमियांरे बड़ो फल पायो रूड़ो फलपायो जिनदेव चन्द्र प्रकाशिया एह० ॥८॥ सिंहासन बैठो माता रामादेवो बोलैं, जिनघर सु विधिनाथ स्वामो जनमियांरे, बड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिनदेव कर्म

खपाविया एह० ॥ ९ ॥ सिंहासन बयठी माता नन्दादेवी बोले, तो जिन घर शीतलनाथजी जनमियांरे, वड़ो फलपायो रूड़ो फल पायो लो जिनदेव शीतल करा-वियां ॥ एह०॥१०॥ सिंहासन बयठी माता विश्नुदेवी बोले, तो जिन घर श्रेयस नाथ जी जनमियांरे,बड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो तो जिनदेव दुःख निवारीयो

एह० ॥ ११ ॥ सिंहासन बयठी माता जयादेवी बोले, जिनघर वासु पूज्यस्वामी जनमियांरे, वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिनदेव दुरित निवारिया एह० ॥१२॥ सिंहासन वैठी माता श्यामादेवी बोले, जिनघर विमलनाथजी जनमियारे, वड़ो फल पायो रूड़ो फलपायो जिनदेव शान्ति

करोविया एह० ॥ १३ ॥ सिंहासन वैठो माता सुयसा देवी वोलैं, जिनघर अनन्त नाथजी जनमियांरे, वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिनघर सुमति कराविया एह० ॥ १४ ॥ सिंहासन वयठो माता सुव्रता देवी वोलैं, जिनघर धर्म्मनाथ जी जनमियारे, वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिनदेव धर्म प्रकाशिया एह० ॥ १५ ॥ सिंहासन वयठी माता अचिरादेवी वोलैं। जिनघर शान्तिनाथ जी जनमियांरे, वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिनघर शान्ति कराविया एह० ॥ १६ ॥ सिंहासन वयठो माता श्रीदेवी वोलै, जिनघर कुन्थुनाथजो जनमियारे, वड़ो फल पायो रूड़ोफल पायो जिनघरं कुमति हटावियारे एह० ॥ १७ ॥

सिंहासन वयठो माता देवी बोलैं जिन घर अरनाथ जो जनमियारे बडो फल पायो रूड़ो फल पायो जिन देव सुमति कराविया एह० १८ सिंहासन वयठो माता प्रभावती बोलैं जिन घर मल्लिनाथजो जनमियारे वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिन देव शोक निवारिया एह०१९ सिंहासन वयठी माता पद्मा देवी वोलैं जिन घर मुनि सुव्रतस्वामि जन मियां रे वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिन देव ईंतिनिवारिया एह० २० सिंहा सन वयठि माताबप्रादेवी बोलैं जिन घर नमिनाथ जो जनमियारे वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिन देव धर्म प्रकाशिया एह० २१ सिंहासन वयठि माता

शिवा देवी वोलैं जिन घर नेमिनाथ जी जन मियां रे वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिन देव पसुव छुड़ाविया एह० २२ सिंहासन वयठी माता वामा देवी वोलैं जिन घर पार्श्वनाथ स्वामी जन मियारे बड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिन कमठसठहराविया एह० २३ सिंहासन वयठी माता त्रशला देवि वोलैं जिन घर महावीर स्वामी जन मिया रे वड़ो फल पायो रूड़ो फल पायो जिन देव मेरू कम्पाविया एह० २४ इति

---

## अथ शासनदेवी का स्तवन।

रिम झिम करती साशन आइ, सेवक ने माता करवा सहाई॥ रिम-

झिम० ॥ आंकड़ो ॥ सज आभूषण पहिर पटंबर, तेजकरी दीपे सहु अंबर ॥ रिमझिम० ॥ १ ॥ जो कोई ध्यावे साशन माई, संकट में करे माता सहाई ॥ मुदगर हाथे वीन वजावे, दुश्मन दोखी खिण में हटावे ॥ रिमझिम० ॥ २ ॥ धर्म नो आल उतारे माता, सेवक ने छिन में करे साता ॥ माताजी छे हाजरा हजूरे, सेवक ना मन वांछित पूरे ॥ रिमझिम० ॥ ३ ॥ तेरी जोत अखंड कहिजे, तेरा भेद तो नहिँ लहिजे ॥ मिथ्यात्वीने सजाया बहु देवे, तिहां तो माता हो जस लेवे ॥ रिमझिम० ॥ ४ ॥ यश होय रह्यो माता गामो गाम, माता पुजावे ठामो ठाम ॥ साद कीया माता परचा देवे, रायराणा मिलने

सहु सेवे ॥ रिमझिम० ॥५॥ माता आगल ऊभा देवी देवा, मातारी करे अहनिश सेवा ॥ रूपऋषी माता वरदाई, सेवक हो जो सदा सहाई ॥ रिमझिम० ॥ ६ ॥

इति शासनदेवी स्तवन संपूर्ण ॥

---

## अथ श्रीचक्रेश्वरीमाताजी का स्तवन ।

देवी चक्रेश्वरी समरीये, समरत होय कल्याण ॥ देवी च० ॥ आंकड़ी ॥ ऋषभ-देव शासन सूरि, समकित धर गुणखाण ॥ देवीच० ॥ १ ॥ अणिआली तोरी आंखड़ी, गले टंकावली हार ॥ देवी च० ॥ काने कुण्डल झलकता, मस्तक मुकुट उदार देवी च० ॥ २ ॥ समरयांसाद देवे सही,

तुम्हारे हाजारा हजूर ॥ देवी च० ॥ सा-
निधकारी सेवकां, वंछित कर भरपूर ॥
देवीच० ॥ ३ ॥ चक्रगदा हाथेधरे, गरुडा-
सन शोभन्त ॥ देवी च० ॥ ४ ॥ ओढण
दक्षिण चीरछे, सोवन चूड़ी झलकंत ॥
देवी च० ॥ ४ ॥ सेत्रुंजे ऊपर राजती,
जात्री भेटे तुझपाय ॥ देवी च० ॥ रूप
ऋषी सेवकभणि, सानिध्याकर मोरि माय ।
देवी च० ॥ ५ ॥

इति श्रीचक्केश्वरीदेवी का स्तवन सम्पूर्णम्

## अथ श्रीशासनदेवी का स्तवन ।

सरस्वती सामिने वीनवूंजी, सद्गुरु
लागूं पायरे ॥ शासनदेवी आवोनि हमारे
घर पावणारे ॥ आंकड़ी ॥ गढ़परबत से

ऊतरीरे, हाथ कमल शीसफूलरे । शासन देवी थांरी भक्ति घणी करूंरे ॥ शासन० आ० ॥ १ ॥ सिर पर शीसफूल शोभतारे, राखड़ीरो अधिकवणावरे ॥ शासन०आ० ॥ २ ॥ नाके नकवेसर शोभतोरे, चूड़िको अधिक वणावरे । शा० आ० ॥ ३ ॥ काजल रेखा सुहामणीरे, निलवट टीको लालरे ॥ शा० आ० ॥ ४ ॥ काने कुण्डल झगमगेरे झुमकी रतन जड़ावरे ॥ शा० आ० ॥ ५ ॥ कंठे सोहे धुगधुगीरे, गलै मोतियनको हाररे ॥ शा० आ० ॥ ६ ॥ वाहे बाजुबन्ध वैरखारे, झवीयाको अधिक वणावरे शा० आ० ॥ ७ ॥ हाथे सोहे चूड़ालोरे, गजरा को अधिक वणावरे ॥ शा० आ० ॥ ८ ॥ पहुंची आगल शोभतोरे, नोगरीरो

अधिक वनावरे ॥ शा० आ० ॥ ९ ॥ अंगुठ सोहे आरसीरे, अँगुठी को अधिक वणावरे ॥ शा० आ० ॥१०॥ पायल सोहे घूंघरारे, अणवट को अधिक वणावरे ॥ शा० आ० ११ ॥ कडोयां पटोला घसमसेरे ओढणो दक्षिणी चीर रे ॥ शा० आ० ॥ १२ ॥ मोत्यां को थाल भरी करीरे, शासन देवी वधावरे ॥ शा० आ० ॥ १३ ॥ देवी आवे घर आंगणेरे, मंगलिक हुआ उच्छाहरे ॥ शा० आ० ॥ १४ ॥ सोवन चोकी वेसणेरे, दूध पखालूँ पायरे ॥शा० आ० ॥ १५ ॥ चावल रांधूं ऊजलारे, हरिया मूंगारी दाल रे ॥ शा० आ० ॥१५॥ खाजा लाडू लापसीरे, घेवर अधिक वणायरे ॥ शा० आ० १७ ॥ पोलीपो

उंसत पुडीरे, तेवण तीस बत्तिसरे ॥ शा° आ० ॥ १७ ॥ घी भरी ठाउ टोकनीरे, पापड तलूयं पचासरे ॥ शा° शा० ॥ १९ ॥ बासठ तेसठ सालनारे, चोसठ वडीयां बघाररे ॥ शा० आ० ॥ २० ॥ पुरसणवाली पदमणीरे, नेवररे झणकाररे ॥ शा०आ०२१॥ आराधन पुरनी ओढ़नीरे । देवगरी वडथालरे ॥ शा० आ०॥ २२ गङ्गाजल झारी भरीरे । मांहरो माताने चलुय करायरे ॥ शा°आ० ॥ २३ ॥ लूंग डोडाने इलायचीरे, वीडा पानपचासरे शा° आ० ॥ २४ ॥ श्रीसंघठोले बीज-णोरे, श्रावक एया लागे पायरे ॥ शा० आ° ॥ २५ ॥ पूजा प्रतिष्ठा महोच्छवेरे । स्ानिध्य करजे मायरे ॥ शा° आ० ॥

२६ ॥ जिन प्रतिमा जिन देहरेरे । नित नित मंगल थायरे ॥ शा० आ० ॥ २७ ॥ कर जोड़ी सेवक वीनवेरे, बरत्या जय जय काररे ॥ शा० आ० २८ ॥

इति श्रीशासन देवी का स्तवन सम्पूर्णम् ।

## अथ श्री चक्केश्वरी माताजी का स्तवन

माता चक्केश्वरी सिद्धाचल वसिया तीरथनो रखवालनो ॥ आंकड़ी ॥ मां महिमा तो अति भारी छै, सुर असुरो मां मोटी छै, मां अकल अरूपी कहावे छे ॥ माता च० ॥ १ ॥ मस्तक मुकट विराजे छे, मां काने कुण्डल छाजे छे, मा बेंदी

टीको शोभेछे ॥ माता च० ॥ २ ॥ मां नेत्रे काजल रलके छे, मां नाके वेसर झलके छे । मां जड़ाऊ भलको चमके छे ॥ माता च० ॥ ३ ॥ मां वेणी दंड विराजेछे, मां बीड़ी मुख मां छाजे छे, मां दांता विच चुंप छाजे छे ॥ माता च० ॥ ४ ॥ मोतीनोहारनवसरो छै मां हैंकल कंठलो लूंबैछे, मां गलेमें तिमणियो सोहे छे ॥ माता च० ॥ ५ ॥ मां बाहे बाजुबंध धारे छे, मां बोरखा झबिया छाजे छै, मां गोफन घुंघरीया वाजे छे, ॥ माता च० ॥ ६ ॥ मां कनक चूडलो खलके छे, मां जड़ाउ कंकन भलके छे, मां आरसी बीटी झलके छे ॥ माता च० ॥ ७ ॥ मां कटी मेखला धारे छे; घुघराली पायल

रमके छे, मां छम छम विछुवा बाजे छै माता च० ॥ ८ ॥ मां कड़यां पटोलो सोहे छै, मातासनी चीर ओढ्या छै, मां अनोखो रूप विराजे छै ॥ माता च० ॥ ॥ ९ ॥ मां अष्टभुजापर धारे छै, मां गदादिचक्रभमाडेछे, मां अंकुश पुस्तक लीये छे ॥ मा० च० ॥ १० ॥ मां छत्र चामर ढलके छे, मां मृगेन्द्र ऊपर बेसे छे. मां सुर नरनामनहरखे छे ॥ माता॥ ॥ ११ ॥ मां गोखे वैठी गाजे छे; मां घडी नगरा वाजे छे, मां सेवा भूपति सारे छे ॥ माता च० ॥ १२ ॥ मां जात्री जन जे आवे छे, चुंदडी हार चढ़ावे छे, मां वांछितफल सहुआपेछे ॥ माता च० ॥ ॥ १३ ॥ मां श्रीसंघना विघन निवारे

छे, मां जात्री जन कुं सानिध्य कारीछे, मां सुत धन देवावाली छे ॥ माता च०॥ ॥ १४ ॥ मां खरतर गच्छपति छाजे छे, मा जिन मुक्ति सूरीश्वर राजे छे, मां सग ला वंछित सारे छे ॥ माता च० ॥ १५ ॥ मां मिरजापुरनो वासी छे, मां धनसुखदास जात्री आया छे, मां चिन्तादुखदूरग माया छै ॥ माता च० ॥ १६ ॥ मां वरस ओग- णीसे बाइस छै, मां चैत्री पुनम जगदी पे छै, मां हेमचन्द्र तुजगुन गावेछै ॥ माता च० ॥ १७ ॥

अलबेलि चक्को सरिमात जोयवाने- जइएरे, जेहनी कंचन वरणीगात जो०, जोयवाजइए पावनथइए देखीनेगह गइएरे, अ० १ । एकतीरथवीजी जग-

दम्बा वन्दीसम्पत लहिएरे अ० १। मृग पति वांहन वालीरेके जो०, जिनगुण गाती लेइताली तीरथनी रखवालीरे के जो० अ० ३। श्री सिद्धाचलगिरिपैराजे देवी देव सहूमन भावेरके जो० अ० ४। रंगित जाली गोख विराजै घड़ी घड़ियालागा जै रेके जो ॥ अ० ५ ॥ चूंदड़ लाल गुलाल सुहावै पीला राता चरनारेके जो० ६ ॥ वीड़ूं सोहै छे जगदम्बाने केसर कुंकुम वरकेरेके ॥ जो० अ० ॥ ७ ॥ खलकेकर कङ्कन ने चूड़ो नवसर हीरा हारें रेकेजो० अ० ८ ॥ रतन जड़ित छै झाझर चरणां, घूंघर के घमकारे रे ॥ जो० अ० ९ ॥ नांकें मोती उजला सोहै वेहूं वाजूबन्ध वांहेंरे के जो०, मस्तक मुगट कानें युग

कुण्डल झलकै हीरामां हेरे के जो० अ०१०
देश देश ना नाना मोटा संघवीसंघलेइ
आवैरे के, जो० । तेसहु पहिले श्रीफल
चुन्दड़ी जगजननी ने चढ़ावेरे के । जो०
अ० ११ ॥ धन्य धन्य ये पुण्डरिक गिरिने
जिहां जगदम्बा निवासारे के जो० । जो
कोई ये तीरथ ने सेवै तेहनी पूरै आसारे
के जो० । संघवी संगतनोरखवाली श्री
जिन आज्ञाकारी रे के जो० आ० ॥ १२ ॥
दीपविजय कहै मङ्गल करजो छे बहु
शोभा ताहरी रे के जो० आ० ॥ १३ ॥

॥ इति श्रीचक्रेश्वरी माता का स्तवन
सम्पूर्ण ॥

## ॥ अथ गरभा ॥

ए प्रभुजी अभिनन्दजिनराज सनेही साजनारे लो ॥ ए प्रभुजी सुनिये अब अरदास हमारे राजनारे लो ॥ ए प्रभुजी तुमसूं दिलदानेहासलूणा में कियारेलो ए प्रभुजी प्रेम सुधारसपान पियाला अब में पियारे लो ॥ प्रभुजी ॥ १ ॥ ए माहारा वालहारे लो ॥ ए प्रभुजी आज भये अतिरंग सुरंगे सांइयारे लो ॥ ए प्रभुजी देखतही दीदार महा सुख पाइया रे लो ॥ ए प्रभुजी भाग्य भले भगवंत हमारे आजसूंरेलो ॥ ए प्रभुजी जो दिलजानीभेट भई जिन राज सूंरेलो ए म्हारा० ॥ २ ॥ ए प्रभु जी तुम साहिब सिरदार हमारे मोहना रे लो ॥

ए प्रभुजी हमको अपना जान जिणंदजी चाहिये रे लो ॥ ए प्रभुजी महिर करो महाराज सनेह निवाहिये रेलो ॥ ए महा० ॥३॥ ए प्रभुजी मोह मिथ्यात्व मिटाय निवाजिश कोजियेरे लो ॥ प्रभुजी समकित दोनदयाल दयाकर दीजियेरेलो ॥ एप्रभुजी संवरनन्दन देव सदैव सुहावणा रे लो ॥ ए प्रभुजी केशर कुशल कि आश पुरो-मन भावना रे लो ॥ ए महारा० ॥ ४ ॥

॥ इति गरभा सम्पूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ गरभा ॥

प्रभुजी सम्भव स्वामि सुज्ञान के, सेवुं अहनिशोरे लो ॥ प्रभुजी देखो तुम दोदार के, थाऊं खुशो रेलो ॥ प्रभुजी दरशन

थो महाराज के मुजने एकठो रेलो ॥ महारा वाल्हारे लो ॥ १ ॥ प्रभुजी अति आतुर थयो चित्तके प्रभुजीने भेटवारे लो ॥ प्रभुजी सेना नन्दन देवके, अभिनव ओपमारे लो ॥ महारा० ॥ २ ॥ प्रभुजी जनम्या जात सुजात के परिमल के सवारे लो ॥ प्रभुजीसेवकनेभरोसो मोटो तुम तणोरे लो ॥ प्रभुजी सांभलि तुमवयनके,मनकुं गहगह्युंरे लो ॥ महारा० ॥ ३ ॥ प्रभुजी बिसरुं नहिं पद पंकजके, सांसो मेटवारे लो ॥ प्रभुजी मोक्षरूपी आयुवर्ग में, जईने तुम वस्यारेलो ॥ प्रभुजी कर्पूरविजयनो शिष्यके तुम अरजीकरेरे लो ॥ प्रभुजी मानकहे सबगातां, आशा सहूफलीरे लो ॥ महारा० ॥ ४ ॥ ॥ इति गरभा सम्पूर्णम् ॥

## ॥ अथ गरभा ॥

प्रभुजीपरतिखजिनवरपासके मन-
सुद्धभेटीयेरे लो ॥ प्रभुजीवामा नन्दन
देवके दरशन दोजीयेरे लो ॥ प्रभु
जी तुमदरशनकी हूंसके मुजमन छे घ-
णोरे लो ॥ महारा० ॥ १ ॥ प्रभुजी सर-
णागतसाधारकेदुःखदूरेकरैारे लो ॥ प्रभु
जीविनतिसुणोमहाराजके सेवकनोसदारे
लो ॥ महारा० ॥ २ ॥ प्रभुजी मुज-
मन हरख उमेदके भेटणारो घणीरे लो
॥ प्रभुजी तुमेछो जलधरजेमके हुंचा-
त्रिकसदारे लो ॥महारा०॥ प्रभुजी जिण
दिन भेटस्युं नाथके प्रभुजी सोसफलो
गिणुरे लो ॥ महारा० ॥ ३ ॥ प्रभुजी वंन्दू
बेकरजोड़ के त्रिकरण सुद्धथोरे लो ॥

प्रभुजी में तजिआ और देवके मन वच कायथोरेलो ॥ प्रभुजी करुणा कीजे स्वामीके सेवक ऊपररे लो ॥ महारा० ॥ ४ ॥ प्रभुजी सेवकनी अरदासके दिलमें धारज्योरे लो ॥ प्रभुजी सेवकनी अर-दासके तेसफली करोरेलो ॥ महारा० ॥५॥ प्रभुजी गौडीमंडणपास के जगमां प-रगडोरे लो ॥ प्रभुजी ध्यानधरू एक-चित्ताके अहनिशो सदारेलो ॥ प्रभूजी जम्पै जिनेश्वर सूरके गुण तुमचाघणा-रेलो ॥ महारा० ॥ ६ ॥

॥ इति गरभा सम्पूर्णम् ॥

# अथ श्रीलोद्रवपुरमंडणचिन्तामणिपार्श्वनाथ जिनस्तवन

कोई जयकारि जिनराज ॥ एदेशी ॥

कोई चिन्तामणि चितधार पास जिणंदारे ॥ कोई वधतेभावविशेष आनन्दकन्दारे ॥ १ ॥ कोई पहिले सुणियाकान दूरजबैठारे ॥ कोई भाग्यउदयशुभपाय नयने दीठारे ॥ २ ॥ कोई जेसलमेर सुथान स्वर्गसमोवड़ेरे ॥ कोई जिहांचिन्तामणिपाससिद्धमहावडारे ॥ ३ ॥ कोई वड़भागी जिनराज विश्वविख्यातारे ॥ कोई त्रिभुवनजेहनोदास पामेशातारे ॥ ४ ॥ कोई जिणदीठा उलसाय मनतन सारारे ॥ कोई जगवल्लभ जगदीश प्राणै

प्यारारे ॥ ५ ॥ कोई जाणे बालगोपाल जगतमे सारारे ॥ कोई पार्श्वनाथ प्रसिद्ध महितसुरसार ॥ ६ ॥ कोईतुजगुण वृन्द अपार किमकहिवाईरे ॥ कोई निज मतिने अनुसार सवहीगाईरे ॥७॥ कोई गुणसागर जिनचन्द वामातनयारे ॥ प-उमावईधरणेन्द्रसेवेविनयारे ॥ ८ ॥ कोई सम्वत वसु भूमान वर्ष पिचयाणुरे कोई जिन महेन्द्रपसाय मनहरखाणुरे ॥ ९ ॥ कोई वडखरतरगच्छ संघ साधु सवायारे ॥ कोई भेट्या श्री जिनराय जिन गुण गायारे ॥ १० ॥

॥ इति श्री लोद्रवपुर मंडण चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनस्तवन सम्पूर्णम् ॥

## ॥ अथ गरभा ॥

कोई जयकारी जिनराज पुरसादानी रे ॥ कोई बामा सुत वरदाय निरमलन्यारीरे ॥ कोई पंचकमल प्रभुअङ्ग निरुपम निरख्यारे ॥ कोई तीन कमल मुजसङ्ग अतिशय हरख्यारे ॥१॥ कोई बदन महोदय देख चन्द लजानुं रे ॥ कोई गगण भमे निसदीस इममन जाणुरे ॥ कोई सुरमणि ज्यूं सुखकार नयन विराजेरे॥ कोई हृदय कमल सुविशाल थालज्युं छाजेरे॥ २ ॥ कोई प्रभु कर चरण विलोक पङ्कज जानुरे ॥ कोई ततखिण निज संवास जलमें धारोरे ॥ कोईसर्वाङ्गउदार श्री जिनरायारे ॥ कोई सांचे पुन्य संयोग साहिब पायारे ॥ ३ ॥ कोई प्रभु गुणअनुभवनीर संच-

सुरंगेरे ॥ कोई टाल्यो पातिक पङ्क आतम सङ्गेरे ॥ कोई सम्बत अठार चौतीस बदि वैशाखेरे ॥ कोई मनोहरपांचमदिन सहुसङ्ग साथेरे ॥ ४ ॥ कोई नगरमहोवा मांहे पास जुहारारे ॥ कोई श्रीजिनगुरु मुनिचन्द बँछित सारयारे ॥ ५ ॥

॥ इति गरभा सम्पूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ गरभा ॥

प्रभुजी श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर भेटीयेरेलो ॥ प्रभुजी भवनासंचितपापपरा सब मेटियेरेलो ॥ प्रभुजी मनधरभाव अनन्त चरणयुग सेवतारेलो ॥ प्रभुजी अणहुंता एक कोटी चतुरविध देवतारेलो ॥ महारा० ॥१॥ प्रभुजी ध्यानधरू एकचित्त

के ताहरोरेलो ॥ प्रभुजी जलजिम लीनो
मीन सदा मन माहरोरेलो ॥ प्रभुजी भवभव
तुमहिजोदेव चरणयुग सिरधरूरेलो ॥
प्रभुजी भवसायरथीतारअरजयाहिजक-
रूरेलो ॥ महारा० ॥ २ ॥ प्रभुजी भूख-
तृषा तपशीत आतम येना सहेरेलो ॥

प्रभुजी तपजपसंयमभारतणो दुःख
नवीलहेरे लो ॥ प्रभुजी पिणजिनवर
जीनो नामतोण आस्पाघणीरे लो ॥ प्रभु
जी एहिज छे आधार जगतगुरु अमभ-
णीरे लो ॥ महारा० ॥ ३ ॥ प्रभुजी तुम
दरशनविनस्वामी भवोदधिहूंफिरथोरे लो ॥
प्रभुजी सहियादुरक अनेकन कारज
को सरथोरे लो ॥ प्रभुजी मिलिया
हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजीयेरे लो ॥

प्रभुजी चउ गति संकट चूर जगत यश लिजिये रे लो ॥ महा० ॥ ४ ॥ प्रभुजी यादव पति श्रीकृष्ण तणो आरति हरीरे लो ॥ प्रभुजी सेनाकीधोसचेत जरादूरे हरीरे लो ॥ प्रभुजी परचापूरण पास स्थाणजिमदीपतोरे लो ॥ प्रभुजी जयवंतो जिनचंद सकलरिपुजीपतोरे लो ॥ महारा० ॥ ५ ॥

॥ इति गरभा सम्पूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ गरभा ॥

सिद्धारथ कुलचंद त्रिशाला माता रे सेवेसुनरइन्द्र जिनवरपाया रे ॥ १ ॥ क्षत्रियकुण्डमझार प्रभुजीजाया रे ॥ जन्ममहोत्सवकीधहरखवधाया रे ॥ २ ॥

श्री वर्द्धमानकुंमार नामधरायाा रे ॥
अपरनाम महावीर देवबोलाया रे ॥ ३॥
जाणी अस्थिर संसार मुनिपद पाया रे॥
तप संयम भरपूर ध्यानसुं ध्या यारे॥ ४॥
॥ ४ ॥ पाया केवल ज्ञान जिन कहिवाया
रे ॥ तारया जीव अनेक शास्त्रे गाया रे॥
॥ ५ ॥ पावापुरी के मांहि शिवपद पाया
रे ॥ यात्राकरवालोक वहुमिलआया
रे ॥ ६ ॥ अमावसनीरात्रि दीसेकाली
रे ॥ प्रभुजी तणो प्रताप थई उजवाली रे
॥ ७ ॥ संवत अठारसेजाण चेहत्तरवर्षे
रे रामलाल गुण गाय दिवाली दिवसेरे ॥८॥
॥ इति गरभा सम्पूर्णम् ॥

---

# अथ श्री महावीर जिन स्तवन

॥ देशी गरभानी ॥ वाहिनी आया

नयरी उद्यान के वाजा वाजीयारे लो ।
वहिनी देव वाजित्र अनेक के गहन घन
गाजीयारे लो ॥ १ ॥ वहिनी समवसरण
अतिचंग के मिलीघणादेवतारे लो ॥
वहिनी अणहुंतेएककोटी के प्रभु पाय
सेवतारे लो ॥२॥ वहिनी इन्द्रभूति आदि
इग्यार के ब्राह्मण दीपतारे लो ॥ वाहिनी
वेद वादनाजाण के वहुवाद जीपंता-
रे लो ॥ ३ ॥ वहिनीसंसयछेअति-
गूढके मिथ्यामतिपूरीयारे लो । वाहिनी
करवा प्रभुसुंवाद के आयाअतिसूरो-
यारे लो ॥ ४ ॥ वहिनीश्रीजिनअमृत
वणीकेसुनिसुखपावीयारे लो ॥ ४ ॥
वहिनी छंडी सकलजंजाल के हुआव्रत
भावियारे लो ॥ ५ ॥ वहिनी इन्द्र

सोना नोथालकेवासक्षेपलाविये।रे ले। ॥ बहिनी अरिहा एहवाचार के तीरथ थापी यारे ले। ॥६॥ बहिनी लावो गहुंली एक के हर्षवधावणारे ले। । बहिनी वधावे श्री जिनराज के करोनित भामणारे ले। ॥ ७ ॥ बाहिनी बांध्यो तोरणबारके सुर तरु मालिकारे ले। बहिनी गावो मंगल गीत के मिलिबहु बालिकारे ले। ॥ ८ ॥ बहिनी गौतम केवल ज्ञानकेसोहे मगध धणीरेले। ॥ बहिनी आई जम्बूकेपाट के पहोंताशिवभणीरेले। ॥ ९ ॥ बहिनी करता एहनो ध्यान के लाहिये यशघणो रेले। ॥ बहिनी विधसूं कहेशुभवीरके हुवो जय जय भणोरे ले। ॥ १० ॥

॥ इति श्री महावीरस्तवन सम्पूर्णम् ॥

## ॥अथश्रीनेमनाथनाजिनस्तवन॥

॥ देशी गरभानी ॥ मेड़या उपर मेह झबूकेवीजलीरेलो ॥ ए देशी ॥ सांवलियाघरआवोकेराजुल वीनवेरेलो ॥ प्रभुजी विरहनखमियेोजायके श्रावण भाद्रवेरेलो ॥ १ ॥ प्रभुजी गाजे गुहिर गंभीरके नहिधीरज मन धरेरेलो ॥ २ ॥ प्रभुजी झिरमिर वरसे मेघ झबूके वीजलीरेलो ॥ प्रभुजी तिणरोपीउघर-आवैके तेपूरेमनरलीरेलो ॥ ३ ॥ प्रभुजी दादुरमोरचकोरके सोरकरे घणोरेलो ॥ प्रभुजी नदियां खलक्या नीर के नीर-झरणा वहेरेलो ॥ ४ ॥ प्रभुजी मदन सतावेजोरके नआवेनीदड़ोरेलो ॥ प्रभुजी चीत्त में आवे नेमके जीवनरी जड़ी

रेलो ॥ ५ ॥ प्रभुजी देखन तुम दीदार के तड़फे आंखड़ीरेलो ॥ प्रभुजी आय मिलूं एकवारकेजोहोवे पांखड़ोरेलो ॥ ६ ॥ प्रभुजी कृष्ण तणो तू बीरके न जाने नेहमारेलो ॥ प्रभुजी जानूं हूंएवातके जोबीतैदेहमांरेलो ॥ ७ ॥ प्रभुजी नवभव केरोनेहके तोड्यो पलकमेरेलो ॥ प्रभुजी आखर जात अहीरके कहावत लोक मांरे लो ॥८॥ प्रभुजी शिव नारोके काजके मोहै छोड़ोगयारेलो ॥ प्रभुजी जायरह्यो गिरनार के योगीश्वरथयारेलो ॥ ९ ॥ प्रभुजी जोरेप्रीति नहोयके कहावत लोक मांरेलो ॥ प्रभुजी बीजो परणु नांहि के जो होवुंछोकरीरेलो ॥ १० ॥ प्रभुजी कत वारीकासूं तके जोडीनेखसूं रेलो ॥ प्रभु

णी तनरी छायाजेमके छेहनदाख सुरे-
लो ॥ ११ ॥ प्रभुजी नेमजिनेश्वर पास
के राजेमति सतोरेलो ॥ प्रभुजी लीधो
संयम भारके पूणमहुं सतोरेलो ॥ १२ ॥
प्रभुजी जगत में गुण सौभाग्य के सेवा
करे जगतमेरेलो ॥ प्रभुजी पातिक जावे
नाशके जपता ते हनारेलो ॥ १३ ॥ प्रभुजी
अविहल जोडी नेहके श्रीजिनरंग करयौ
रेलो ॥ प्रभुजी जोगावे एकचित्तके शि-
वपदवी लहेरेलो ॥ १४ ॥
॥इति श्रीनेममनाथ स्तवन सम्पूर्णम्॥

---

## ॥ अथ गरभा लिख्यते ॥

साहिबा अभिनन्दनजिनराजके
सुणज्योबीनतिरेलो साहिबाधरजोप्रीति
विशेषके दिन २ बाधतीरेलो ॥१॥ साहिबा
मुज हियडो हेजालुके हिलियो हेजसूं रेलो ॥

साहिबा खिणखिण दरशण काजके अति तपतेजसू रेलो ॥ २ ॥ साहिबा रीत हमारी जाणकें सांची एसहीरेलो ॥ साहिबा तुम सरिखाससनेह के बीसरस्येनहीरेलो ॥३ ॥ साहिबा तुम साथेमेलापके एकघड़ी तणोरेलो ॥ साहिबा जेहनो जोड़न होय के बीजाने घणीरेलो ॥ ४ ॥ साहिबा फलिया मनोरथ आजके मिलिया तुम तणोरेलो ॥ साहिबा आजसुदिनसुप्रमाणके राम इसूं भणेरेलो ॥ ५ ॥

॥ इति गरभा संपूर्णम् ॥

---

## अथ श्री नेमनाथजिन स्तवन

आवो हरीला सरिया वाला ॥ एदेशी ॥ राजुल बोली मोहनवेली, श्रावण

मासमें साहेली, नेमगया मुजनेमेली ॥
आवो हरिवंशतणाराजा, राखो निज
कुलनी लाजारे ॥ १ ॥ भादरवो भरजल
बरसे बीजली बादलिओफरसे, पीउपीउ
करी चातकलवसे ॥ आवो० ॥ २
आसोमासेदीवाली, घरघरदीपक अजु-
वाली, साकरसेवनेसुहाली ॥ आवो ॥३॥
कार्तिकमाससखिआव्यो, नेम नगीनो
हजुन आव्यो, संदेशोकोई नलाव्यो ॥
आवो० ॥४॥ मागशिर मोह दिशावागो,
अंगविन्यानोथईरागी, कंतआव्यो सुपने
जागी ॥ आवो० ॥ ॥ ५ ॥ पोषेटाढपणी
पडश्ये, दंपतिनामनडामनहरखे, विर-
हनो नारीकिसूं करशे ॥ आवो० ॥ ६ ॥
माघमासेमोहनगारी, तुजभवान्तरनी नारी,

किमनवभवसेलो विसारी ॥ आवो०
॥७॥ फाल्गुनेफूलघणीराशि, सेजसुगन्ध
घणीवासी । जाण्युमोहनमलशेआसी ॥
॥ आवो० ॥ ८ ॥ चैत्रेचतुरावनचालो,
केलकरेसरखोआलो सांभरांच्यामडेभालो
॥ आवो० ॥९ ॥ वैशाखेसाखेफलशे तेदिन
मुजसाथेगमशे ॥ आवो०॥१०॥ ज्येष्टेयाद-
वनाराजा मेतोघणेरीकरीमाया, राजुलने-
मनडेभाया ॥ आवो०॥११॥ आषाढ़ऊंडे-
रोगाजे, शीतलवायघणावाजे, पंखीनिज
घरमेंछाजे ॥आवो० ॥ १२ ॥ राजुलवैरा-
गेपासीया, संयमलेवाचित्तधरिया रिषभ
कहे समतारसभरिया ॥ आवो० ॥ १२ ॥
॥इति श्री नेमनाथजिन स्तवन संपूर्णम्॥

# ॥अथ सोलसतीकी सिझाय॥

शीलसुरंगोभातिसु ओढणचूंनडी। जग जिनकोजसवास सतीसोलेवडो। शिवसुख मङ्गलकोडिलहेनरनेसदा। सतिआंका-गुणग्रामकहूं मुखतेसदा॥ १॥ शीलवती सिरमोड़ नमोसंपदभरी। पुत्रीआदिजि-नेशकित्राह्मीसुन्दरी॥ वन्दुवेकरजोड़ चन्दनबालासती। पडिलाभ्या महावीर घोरमोटायति॥२॥ नेमकुंवरसूंनेह कियो राजेमती। प्रतिबोध्यो रहनेम कुमारी महासती॥ निरख्यो किनहिं नगात द्रौ-पदीनेनसुं। शील प्रतापचोर वध्योसुख चेनसुं॥ ३॥ कलिमेंकरलेनाम कौशल्या गावतां। महियलमोटीनाम मृगावती ध्यावतां॥ समरुं सुलसाचित्त नित्यसेवा

करें । इन्द्रादिकके संग रंगनाटक धरे ॥ ४ ॥ सीतासरसो सरससती संसारमें । हुई नहोसीहोय ॥ ऐसोनरजातिमें पिउ परिपूरण प्रेम प्रगटकियो खलकमें ॥ ५ ॥ चालनिकाढ़योनीर सुभद्राताहरे । शीलर-तनबलिजांउ सेवाभनमाहरे ॥ गुरु गुरु कहेनशकेगुण कुन्तीभामनी । दमयन्ती को होड़ करे कुणकामिनी ॥ ६ ॥ दमयं-ती मुखचन्द पक्षदोयनिरमला । सुरनर नेत्रचकोर दरशदेखेभला ॥ पायप्रणमु परभात चेलना प्रभावती । प्रेमराज प्रश-स्त सदापद्मावती ॥ ७ ॥

॥ इति सोलसती को सिझाय संपूर्णम् ॥

# ॥अथ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन॥

॥ राग सोरठ ॥ ऋषभजिनेश्वर दिन-
करसाहिब वीनतड़ी अवधारोरेजगना
तारूं मुजतारोरे कृपानिधिस्वामी ॥ १ ॥
जगजसवाद प्रगटछेनाहरो अविचलसुख
दातारोरे ॥ जगना० मुज० ॥ निजगुण-
भोक्ता परगुणलोप्ता आतमशक्ति जगा-
योरे ॥ जग० मुज० ॥ अविनाशी अवि-
चल अविकारी शिववासो जिनरायारे
॥ जग० मुज० ॥ २ ॥ इत्यादिकगुण नि-
सुणी श्रवणे हुंतुमचरणेआयोरे ॥ जगना०
मुज० ॥ तुम्हरीभावणहेतैंतत्क्षणनाटक
खेलमचायोरे ॥ ज० ॥ मुज० ॥ ३ ॥ काल
अनन्तरह्योएकेन्द्रि तरुसाधारणपामोरे
॥ जगना० ॥ वरससंख्याता बेतो

विकलेन्द्रि वेपधरथया दुःखधामीरे ॥ जग०॥ मुज० ॥ ४ ॥ सुरनरतिरिखली नरक तणीगति पंचेन्द्रिपणोधारयोरे ॥ जग० ॥ चैावीसे दंडकमांहिभमतो अवतो हुंपिणहारयोरे ॥ जग०मुज० ॥ ५ ॥ भवनाटक नितप्रतिकर नवनव हूंतुमआगलनाच्योरे ॥जग०मुज०॥ समरथसाहिब सुरतरुसरिखो निरखीतुजनेजाच्योरे ॥ जग० मुज० ॥६॥ जोनविरीझ्यातोमुजभाखो वलोनाटकनवकीजेरे ॥ जग० ॥ जोसुझनाटकदेखीरीझ्या तोमुजवांछितदीजेरे ॥ जग० मुज० ॥ ७ ॥ लालचधरहूं सेवासारू तूहुंखड़ानविकापेरे ॥ जग० ॥ तुम सरिखा साहिबदाता सूमभलेरा वहिलोउत्तरआपेरे ॥ जग० ॥ ॥ मुज० ॥ ८॥ तुम सरिखा साहिब पिण

माहरी जीनविकारमझारोरे ॥ जगना० ॥ तोमुझकर्मतणी गति अवली दोषनकोई तुम्हारोरे ॥ जग० मु ज० ॥ ९ ॥ दीनदयाल दयाकरिदीजो शुद्धसमकित सहिनाणीरे जग० ॥ निर्गुणसेवकना वंछितपूरो तेहिज गुणमणिखाणोरे ॥ जग० मु ज० ॥ १० ॥ वरस अठारह गुणचालीसे ज्येष्ठशुक्ल सोमवारोरे ॥ जग० ॥ लालचन्द्र प्रतिपद दिन भेटया बीकानेरमझारोरे ॥ जगना० मुज० ॥ ११ ॥

इति श्रीऋषभदेवजिन स्तवन संपूर्णम्

---

## ॥ अथ राणीपुरजीका स्तवन ॥

राणपुरे मनमोहियोरेलाल, प्रथम तीर्थंकरदेव सुखकारिरे ॥ हुं आयो उल्लट-

घरीरेलाल, संप्रति करवासेव सुखकारीरे ॥ राण० ॥ १ ॥ नयण कमलकी पांखड़ी रेलाल.अथवा अमियकचोल सुखकारीरे॥ सूरत दीठी जिनतणीरेलाल. मुजमन हरख कलोल सुखकारीरे ॥ राण० ॥ २ ॥ दरश नज्येतिहोराजडीरेलाल, अधरप्रवालीलाल सुखकारीरे वाहेलोहे वहरखारेलाल तिलकविराजतभाल सुखकारीरे ॥ राण० ॥ चोविसमण्डप चिहुंदिशिरेलाल प्रतिमा, चारहजार सुखकारीरे ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरोरेलाल, समवडनहींसंसार सुखकारीरे ॥ राण० ॥ ४ ॥ दीठीवहोत्तर देहरीरेलाल माहे अष्टापदसुमेर सुखकारीरे ॥ भुंहरा दीठाअतिभलारेलाल, सूतांउठोसवेर सुख-कारीरे ॥ राण० ॥ ५ ॥ पंचतीर्थ

मांहेंभलोरेलाल शत्रुंजयगिरनार सुख-
कारीरे । तोरणएकसो जाणियेरेलाल
खम्भादोयहजार सुखकारोरे ॥ राण० ॥६॥
पांचसे बावन पूतलीरेलाल अपच्छरानो
घरे ओल सुखकारोरे । हुंआवोदरशन
देखवारेलाल, चिहुंदिशिचारुपोल सुखका-
रोरे ॥ राण० ॥ ७ ॥ चौमुख देखो देहरो
रेलाल, क्षणनविमूक्योजाय सुखकारारे ।
जिमनिरधनधन पामीयेरेलाल, जीव
रह्योलपटाय सुखकारीरे ॥ राण० ॥ ८ ॥
जिनवरनांगुण सायरभरयारेलाल फूल-
रह्योमनमीन सुखकारोरे । तेकांईकाधो
मोहनीरेलाल नयन हुआ लयलीन सुखका-
रीरे ॥राण०॥ ९ ॥ देवघणाए देवतारेलाल
तेतोरंगपतंग सुखकारोरे । फाटेपिणफीटे

माहिरेलाल जिनवररंगमजीठ सुखकारीरे ॥
॥ राण० ॥ १० ॥ देखंतानयणा ठरेरेलाल,
भेटंता दुखथाय सुखकारीरे ॥ राण० ॥११॥
श्रीराणपुरकी मांडणारेलाल, कहतां नावे
पार सुखकारीरे । जेभेट्या तेजाणसीरेलाल
मेरुतणोविस्तार सुखकारीरे ॥राण० ॥१२॥
साहिवसांभल वार्नातिरेलाल, एककरु अ-
रदास सुखकारीरे । जोसेवककरी जाण-
स्योरेलाल तोपुरोमनआस सुखकारीरे
॥ राण० १३ ॥ कुंभोराणो मोटोहुवोरे
लाल मोटोदेशमेवाड़ सुखकारीरे । मोटो
तीरथ माडियोरेलाल, धनधन्नोपोरवाड़
सुखकारीरे ॥ राण० ॥ १४ ॥ संवत् सत्तर
पनडोत्तरेरेलाल, चैत्रीपुनम सोमवार सु-
खकारीरे । यात्राकीधी जिनतणारेलाल

दिनदिनहोवे जयजयकार सुखकारीरे ॥ राण० ॥१५॥ सांडेरागच्छमें दीपतोरे-लाल देवसुन्दर सूरिराय सुखकारीरे। नाभिनन्दन गुणगावतारेलाल. शिवसुन्दर सुखथाय सुखकारीरे ॥ राण० १६ ॥
॥ इति राणपुरजीकास्तवन संपूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ राणा पुरजीकास्तवन ॥

राणपुरो रलियामणोरेलाल श्री आद श्वरदेव मनमोह्योरे। उत्तंग तोरण देहरोरेलाल. निरखी जेनित्यमेव मनमोह्योरे ॥ राण० ॥ दोपैंत्रावन देहरोरेलाल, माड्योअष्टापदमेरु मनमोह्योरे। भलाजुहारया भूंहरारेलाल सूतांउठासवेर मनमोह्योरे ॥ राण० २ ॥ चोविसमंडप चिहुं-

दिशे लाल, चौमुखप्रतिमाचार मनमोह्योरे त्रैलोक्यदीपक देहरोरेलाल, समवडनहिकोसंसार मनमोह्योरे ॥ राण० ३ ॥ किणदिशादिसे देहरोरेलाल मोटोदेशमेवाड़ मनमोह्योरे । लाखनिनाणु लगावियारेलाल, धनधन्नो पोरवाड़ मनमोह्योरे ॥ राण० ४ ॥ खरतरवसही खन्तसुरेलाल, निरखन्तासुखथाय मनमोह्योरे । पांचप्राशाद बीजाकीरेलाल जोता पातिक जाय मनमोह्योरे ॥ राण० ५ ॥ आजकृतारथ हूं थयोरेलाल, आजहुवो आणंद मनमोह्योरे । जात्राकरी जिनवरतणीहोलाल जोता पातिकजाय मनमोह्योरे ॥ राण० ६ ॥ संवत सत्तर छिहोत्तररेलाल मिगसरमासमभार मनमोह्योरे । राणपुरे यात्राकरी

रे लाल, समयसुन्दर सुखकार मन-
मोहयोरे ॥ राण० ॥ ७ ॥

॥ इति राणपुरजी का स्तवन संपूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ श्रीगोडी पार्श्वनाथजिन ॥

### स्तवन ।

॥ चाल होलीकी ॥ पासगोडी प्रगट्या
गामविठोरा, भविजन करत निहोरा । पास
गोडी प्रगट्या गाम विठोरा ॥ ए आं० ॥
भालहृदयदोउ हीराझकझकत, जैसे चन्द्रउ-
जेरा । जोवित फणिधर छत्रकीयेसिर,
कलियुगहुआ अच्छेरा ॥ पास० १ ॥ द्वितो
य श्रावण शुदि एकादशी, अर्द्ध रयण चन
घोरा । भूमिफाटके प्रभुजी प्रगटया, अ-

घतमनासतमोरा॥ पास० २ ॥ पुष्फमाल जिनकंठसोहे केसरसुं चरचेरा । कुन्डोमें प्रभुबैठा निकल्या, चमतकार चित्तचोरा ॥ पास० ३ ॥ चंदनमलढोढ़ा वड़भागो ताकूँसुपनहुओरा ॥ श्वेतवर्ण स्वामि मूर्तिं सोहे श्रीसङ्घकरतनिहोरा ॥ पास० ४ ॥ ग्रामनगरके सकल सङ्घमिल पूजाकरे हुल सोरा॥ सुद्धचित्तहोई गोडोप्रभुध्याओ, जन्ममरण मिटजोरा ॥ पास० ॥ ५ ॥ सुख सम्पत दोजो शिवपद, दुख दालिद्र नि-वेरा ॥ अद्भुतदरशन तुम्हारापायो, दिन दिनहोतउजेरा ॥ पास० ६ ॥ उगनोसे गुण चालोसेवर्षे, सुभमुहूर्त्त भृगुहोरा ॥ खरतर गच्छमें राजे अद्भुत मोहनमुनि गुरुगोरा ॥ पास० ७ ॥ तासु शिष्य पूनमचंदगावे

शीसनमाई करजोरा ॥ गोड़ीजी कृपाकर वंछितपूरो, दरशनद्यो दिलभोरा ॥ पास- ८ ॥

॥ इति गोडीपार्श्वनाथ जिनस्तवन ॥

---

## ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजिनस्तवन ॥

पास जिनेश अलवेसरू, विमल सुगुण सुखकंद ॥ भेटतपद जिनराजनो, दूर होवे दुःखदंद ॥ पास० ॥ १ ॥ सेवित इंद्रनरेंद्र सूं, उपमायुतधरणिन्द्र ॥ नितही पूजे संघ भावसूं, वंदे पद अरविंद ॥ पास० ॥ २ ॥ संतत नग भू निधि धरा वदि, शुचि दूज होचंद ॥ बिंबप्रतिष्ठाथई मनरङ्गसु, उपज्यो परमानंद ॥ पास० ॥ ३ ॥ वेदीविच

स्थापनभया, गोड़ीजो पास जिणंद ॥ सेवनसे बहुसुखमिले, छूटे भवदुःखफंद ॥ पास० ॥ १ ॥ काशीदेश वाणानगरी रसो, वधतेमोदअमंद मुक्तिसूरीश्वरवोनवे सेवक श्री जिनचंद ॥ पास० ॥ ५ ॥

॥ इति श्री पार्श्वजिनस्तवन सम्पूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ श्रीनवपदजीकास्तवन ॥

जगतमेंनवपदयकारो, पूजतांरोगटलेसारी । प्रथमपद तीर्थपतिराजे, दोष अष्टादश-कूंत्याजे ॥ अष्टमहाप्रातिहारजकाजे, जगत प्रभु गुणबारेछाजे, दोहा— अष्टकर्मदल जीतके सकल भ्रष्ट हुयईआय । सिद्ध अनंतभजो बीजेपद, एकसमेंशिवजाय ॥ प्रगट भयो निज स्वरूपाभारी ॥ जगत० ॥ १ ॥

सूरिपदमें गौतमकेशी ओपमासूर्यचन्द्रजैसी उधास्योराजापरदेशी एकभवमांहे शिव-लहसो ॥दोहा॥ चोथेपद पाठकनमु श्रुत धारी उवझाय ॥ सर्वसाधु पंचमपदमांहि घनधन्नो अणगार ॥ वखाण्यो वीरप्रभु भारी ॥ जगत०॥ २ ॥ द्रव्यषटकी श्रधा आवे समसंवेगादिकपावे । विनाःजाने ज्ञान नहिकिरिया जिनदर्शनसे सबत-रिया ॥ दोहा ॥ ज्ञानपदारथसातमे पदमे आतमराम ॥ रमतारमै अध्यातममांहै निजपदसाधेकाम ॥ देखतां वस्तुजगत-सारी ॥ जगत० ॥ ३ ॥ योगनीमहिमा बहुजानीचक्रधरछोड़ीसहुराणी ॥ यतो-दशधर्म करीसोहे मुनीश्रावक सब मन-मोहे ॥दोहा॥ कर्मनिकाचित काटवा तप-कुठारकरलाव ॥ येनवपदजोकरतक्षमासे

कर्ममूलकटजा ॥ यजोनवपदजगसुख-कारी ॥ जगत० ॥ ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र भ-जोभाई आचामलतप नवदिन ठाई ॥ पाप तिहुयोगे परिहरजो भविश्रीपालपरेकर-जो ॥ दोहा ॥ उगणीसे सतरासमे जयपुर श्रीसुपास॥ चैत्रधवलपुनमदिने सफलफली सहुआश ॥ बालकहे नवपदछिवप्यारी ॥ जगत० ॥ ५ ॥

॥ इति नवपदकास्तवन सम्पूर्णम् ॥

---

## अथ श्रीनेमनाथजिन लावणी

नेमकीजानबनोभारी देखणकूं आये नरनारी ॥ लक्षघोड़ा औरहाथी, मनुष्यकी गिनतीनहींआती ॥ गेंदपरधजा फररासी, धमकसुन धरतीथररातो ॥दोहा॥ एजी समुद्रविजयजीकेलाड़ले नेमकुंवर-

जीनाम ॥ राजुलकूं परणीजनैं चाल्या उग्रसेनकेधाम ॥ हरखभये सबहीनरनारी ॥ नेमकी० ॥ १ ॥ निकटजब तोरणके आये, पशूजीवदेखत विलखाए ॥ नेमजो वचन जो फरमाये पशूतुम काहेकुंलाये ॥ दोहा ॥ एजीउग्रसेनजी आविया मन-मेंकियाविचार ॥ पशूजोवोनेकोयाएकठ वाडावहुबरवार ॥ कियासब भोजनकी-त्यारी ॥ नेमकी० ॥ २ ॥ कसूंबलवाघा अतिभारी कोरगोटनकी छबन्यारी ॥ मालगल मोतियनकोछाई किलंगोसोहै सुखकारी ॥ दोहा ॥ एजी कानोकुण्डल जगमगे शीससेहरोजान । कहालगकहूं उपमाजिनकी शोभा इन्द्रसमान ॥ बाजा बजरह्या एकतानी ॥ नेमकी० ॥ ३॥ छुट

रहाहुक्कावरराई बानमेंतांबाढोलकाई ॥
झसेखाराजुलदेधाई देखमन अतिही सुख
पाई ॥ दोहा ॥ एजी याकोजोमनहोय-
तो जान आपकीजोय ॥ इतनीबातसुनी
नेमीश्वर थरहर कंप्यासोर ॥ दौड़के
चढगए गिरनारी ॥ नेमको० ४ ॥ तुजेक-
हांजावोमेरीमाई औरवरहे सन्मुखताई ॥
सहेल्यांसवही समझावे दायराजुलके
नहींआवे ॥ दोहा ॥ एजीमेरेतो वरएक
है वेगएनेमकुमार ॥ दुजोवरमें कबहिन-
परणु कोटिकरीउपाय ॥ दौड़के चढगई
गिरनारी ॥ नेमको० ॥ ५ ॥ तज्यासब
सोले शिणगारा आभूषण रत्नजड्यासारा
सर्वसुख लागतहैखारा छांड़वनचालीनि-
रधारा ॥ दोहा ॥ मातपिता परिवारकुं
तजतनलागीबार ॥ वेगिजाईमिलुं अब

पिउसे चढ़गईगढ गिरनार ॥ महलविच झूरेमहतारी ॥ नेमकी० ॥ ६ ॥ देखाजब ऐसीविधपाई दयापशुवनकी आई ॥ पाप सब भूल्यो छिनमांहि ॥ दोहा ॥ एजीनेमराजुलगिरनारपैधार्‍यो निरमलध्यान लवलीनरामने लावणोजोड़ी उपनोकेवल ज्ञान ॥ मुक्तिका भयाजोअधिकारी ॥ ॥ नेमकी जान० ॥ ७ ॥

॥ इति नेमनाथजिन लावणीसंपूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ स्तवन ॥

जगतमेंकोईनहीं अपना समजमान सुपनेमेंरेहना ॥ आंकणी मनुष्यभव फेरनहीं होना धर्मसे चोकसहोयरहना ॥ १ ॥ जगत०॥ कुमति कूं छोड़ सुमति कूं धरना

पापसें निशहीदिनडरना ॥ सुमतिजिन चरनोमेंरेहना सबभव पातिकसें टलना ॥ जगत० ॥ २ ॥ सेवककी एहिअरजसुनना कुशलगुरु चरणोंमेंपरना ॥ जगतमें कोईनहींअपना समझमन सुपनेमें रेहना ॥ ३ ॥ ॥ इति स्तवनसंपूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ स्तवन ॥

चेटकदरशनकिलगोदिलमें केप्रभूमुख देखुंगीछिनमें ॥ आंकड़ी ॥ मस्तक मुगट हीरांजड्यो कानेकुन्डलसार ॥ बाहेंबाजुनध वेरखारें गलेमौतीयनोंकोहार ॥ चेटक ॥ १ ॥ घसकेसर भरबाटकी पूजूं पारस नाथ ॥ फूलचढ़ाउ सेहरारे पूजूं नवनव-अङ्ग ॥ चटक०२॥ कड़िकंदोरी हीरांजड्यो

हाथेश्रीफलसार ॥ कड़लाते हीरांजड़्या कांईपुहची रतनजड़ाव ॥ चेटक० ॥ ३ ॥ हाथजोड़ अरजीकरूं वीनतड़ीअवधार । यारवार म्हारो याहिबीनती आवागमन-निवार ॥ चेटक० ॥ ४ ॥

॥ इति स्तवनसंपूर्णम् ॥

---

## अथ श्रीगोडीपार्श्वनाथजिन स्तवन ।

सांचोसाहिबनिरधारी, मुझलागीहै-प्रीतिअपारी ॥ नितप्रतिजाउ तुझबलिहारी गोडीराय वीनतिमानीजे ॥ गोडी० ॥ सुद्ध-दरशन हारेसुद्धसमकित वहिलोदीजे ॥गो-डी०॥ १ ॥ प्रभुअविचल अगमअरूपी,सुद्ध-ज्ञानामृतरसकूंपी, तुमेटाल्या कर्मविरूपी

॥ गोडी० ॥ २ ॥ तुझज्योतिःअखंडविराजे प्रकाश त्रिहुंजगछाजे, निरखोलख दिन- करलाजे ॥ गोडी० ॥ ३ ॥ तुझसंगै चित्त- लोभानो, हिवेचुकूंनही एटाणो, प्रभुतुम- पिण हठमतताणो ॥ गोडी०॥४॥ हियडेधरी हर्षअमंदा, सेवे तुझपदअरविंदा, एतो- कमलसुन्दर तुझवंदा ॥ गोडी० ॥ ५ ॥

इति श्रीगोडीपार्श्वनाथजिनस्तवनसंपूर्णम्

---

## ॥ अस्थ स्तवनशिखामण ॥

दमकानही भरोसाहै, करले चलनेका सामान ॥ दमका० ॥ तनपी जरसेनिकल- जायगा छिनमेंपंक्षोप्राण ॥ दमका०॥ १ ॥ लखचौरासो योनिमेंभटक्यो, उपनोगरभा- वास ॥ सवानवमास वस्योअन्धकूपमें,

मनुष्यरूपसनमान ॥ दमका ॥२॥ उत्तम-
कुलमें जन्मलियोहै, सुखमें ध्यांनऔरप्राण
। द० ३। भीडेतेरा कोई नहिं साथो साथो,
दानऔर ध्यान॥दमका०॥४॥आशा तृष्णा
विकथानिद्रा, कुमतारूपनिधान ॥ दिन-
दिनवधे पापकी संगति, व्यापे क्रोध और
मान ॥ दमका० ॥ ४ ॥ चलते फिरते
सोवत जागत, करता खान और पान ॥
छिनछिन छिनछिन आयुघटतहै, होतदेह
कीहांन ॥ दमका० ॥ ५ ॥ मालमुलक
औरसुखसंपतमें, होयरह्यागलतान ॥ देखत
देखत विनशजायगा, मतिकर मान-
गुमान ॥ दमका० ॥६॥ झूंठासवहै जगत
पसारा, नारीविपकीखांन ॥ मायालोभ
आदिकेवयरी, ईनसें कहापहचान ॥ दम-
का०॥ ७ ॥ पांचो चोरमुसेघरतेरा ईनकी-

खोटीबान ॥ आठवयरी तेरेसंगफिरतहैं, मोहबड़ासुलतान ॥ दमका० । ८ । काल-बलीतेरेशिरपरखेले, सांधेफिरताबान ॥ ॥ दमका० ॥ ९ ॥ कोईनरहनेपावे-जगमे, यहतूँनिश्चयजान ॥ अजहुं समझ छांड़िकुटलाई मूरखनरअज्ञान ॥ दमका० ॥ १० ॥ भाईबंधऔरसज्जनसं-बंधि, राखेतेरामान ॥ अन्त समेकोई कामनआवे, किसपर मानगुमान ॥दमका० ॥ ११ ॥ जपतपशील करोसतसंगत देहु-सुपात्रेदान ॥ संगतसाधु चरणचित्तल्यावु प्रभुभजि तजअभिमान ॥ दमका नहीं भरोसा है ॥ १२ ॥

॥ इति स्तवन शिखामण सम्पूर्णम् ॥

## ॥ अथ स्तवन ॥

॥ रागसामेरी ॥ मेरेमोहन कोनपुरी जायवसिया ॥ निशदिन मग जोवतसस नेही ॥ पतियाक्युंनपठाई ॥ १ ॥ विछुरन की विरियाचितवतही ॥ आवतनयन भराई ॥ हैकोउऐसो हितूँहमारो ॥ ज्यो- ल्यावेवहुराई ॥ मेरेमोहन० ॥ २ ॥ किन- हिनखवरदई उहांकी ॥ अबहै कोनसखाई ॥ श्रीजिनराजवदेइकअपणी ॥ आवत साथ कमाई ॥ मेरेमोहनकोनपुरी जायवसिया ॥ ३

॥ इति स्तवनसंपूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ स्तवन ॥

रागसारंग हमारेमाइ कंतदेसाउरकीनो आयेजोरहुकमसांइके पलभररहननदीनो ॥

हमारे० ॥ १ ॥ जावोकहां दरबारकरोगे चलेहो खाइखजानो ॥ छिनछिन घटत अवधिदिनछिन प्रेम सुधारसभीनो ॥ हमारेमाइ० ॥ २ ॥ दुनियांदेखि सैरबाजिसो, लोभोपिउ नपतिनो ॥ श्रीजिन राज वदत औचितगई, सबलसंग मोहै दीनो ॥ हमारे माइ० ॥ ३ ॥

इति स्तवनसम्पूर्णम् ॥

---

## ॥ अथ श्रीनवपदजीका स्तवन ॥

पहिलेपदअरिहंतनोजी, ध्यावुचित्त धरध्यांन निरमलमनराखोकरोजी, पामु पंचमज्ञान सुज्ञानी ॥ आराधो सिद्धचक्र ॥ १ ॥ सिद्धशिलापर सिद्धवसेजी, दूजेपद चित्तलाय॥ वांदूपूजूँजुगतसुंजी, कर्मकलंक

कटजाय सुज्ञानी ॥ आरा० ॥ २ ॥ आ-
चारजतीजेपदेजी, पंचाचारविचार ॥ गु-
णगावै निशदिनसदाजी, ज्यूटतरूं नव-
पार सुज्ञानी ॥ आरा० ॥३॥ पाठकपदधा
रकसदाजी, सूत्रअर्थभंडार ॥ चोथेपद
प्रणमूँसदाजी, मुक्तितणो दातार सुज्ञानी
॥ आ० ॥४॥ सुमति गुप्ति करि शोभताजी,
साधूक्षमावन्त पंचमपदसमरणकरूं
जी, क्षमाधारकसंत सुज्ञानी ॥ आ० ॥ ५ ॥
दर्शनपद छठेकह्योजी, श्रीज्ञानोमहाराज ॥
तहत्तिकरीनैसरदहूंजी, एछेभवजलपाज
सुज्ञानी ॥ आ० ॥६॥ ज्ञानपदारथ सातमे-
जी, लोकालोकप्रकाश ॥ गुणगावुं निश-
दिनसदाजी, पाउं अविचलवास सुज्ञानी॥
आ० ॥ ७ ॥ चारित्रपद एआठमेजी, सर

भेदेजाण ॥ कर्मतिमिरदूरीकरेजी, जिमउगंतेभाण सुज्ञानी ॥आ० ॥८॥ तपमहिमा नव मेंपदेजी, भाखेश्रीजगदीश जयकीर्ति संपत्त लहेजी, जाणोविसवावीस सुज्ञानी ॥ आरा धोसिद्धचक्र ॥ ९ ॥

इति श्रीनवपदजाकास्तवन संपूर्णम् ॥

---

## अथ श्रीआदिनाथजिनुस्तवन॥

आदीश्वर विनतिसुनलीजे, मुजउपर महिरकरिजे ॥ आदी०॥ नाभिकुलगर नृप कुलचंदा,मरुदेवा परमआनंदा, जसुसेवत जनसुखकंदा ॥ आदी० ॥ १ ॥ तुमदरशन विनहूं भमियो, भवनाटक नितप्रतिरमियो, कोईदाता नहींमनगमियो ॥ आदी० ॥२॥ अविनेश्वरजोधनआपै, दुःखपातिक दा-

लिद्धकापे, शिवपुरनो राजसमापै ॥आदी०
॥ ३ ॥ मोहभूपति बल अतिभारी, चिहुं
घेरत जनशिवचारी, गुणलुंठत अतिसुख-
कार ॥ आदी० ॥ शिवसंपत्ति दायककोई
रतिरागादिकमलधोई, नहीं, निरख्यो तुम
विनकोई ॥ आदी० ॥ ५ ॥ पुण्यजोगेथि
प्रभुतुममिलिया, मुखदेखत रिपुसबगलि-
या म्हारामनका मनोरथफलिया॥ आदि०
॥ ६ ॥ तुममुद्रावहुसुखदाई, शांत्यादिक
गुणरसछाई, मुजदेखत अतिमनभाई ॥
आदी० ॥ ७ ॥ मिथ्यामतिदूरहरीजे, सुद्ध-
समकित निधिवकसीजे, गुणक्षायिक जेहिं
प्रगटिजे॥आदी०॥८॥ भवनादुःखदूरपुलाउं,
निजआतमबोधिजगाउं, जिननायकनागुण
गाउं ॥ आदी० ॥९॥ उगनीसे तीसे वरसे,
भाद्रवसुदि पडिवादिवसे, पीपलोदमें

मंदिरविलसे ॥ आदी० ॥ १० ॥ सूरिवर श्रीबालचंद्रा, दिलहरषितयुतमुनिवृन्दा, नित प्रणमे पदअरविंदा ॥ आदी० ॥ ११ ॥

॥ इतिश्रीआदिनाथजिनस्तवन संपूर्णम् ॥

---

## अथ श्रीअजितनाथजिन स्तवन

अजित अजित सवशत्रुते, जीतयामो-हप्रसारजिनन्दजी ॥ आतमगुण सम्पत्त-लही, वारियावैरिप्रसार जिनन्दजी ॥ अजि ॥ १ ॥ तुमवचनामृतसुखकरूं, स्याद्वाद गुणधाम जिनन्दजी ॥ पानकरेजेहितधरि पामेतेविश्राम जिनन्दजी ॥ अजित ॥ २ ॥ बादएकांतेजेरह्या, पक्षकदाग्रहतान जिन-न्दजी ॥ तेकिमसमभैतुमतणो, वाक्यभेद-गुणखान जिनन्दजी ॥ अजित ॥ ३ ॥ बकुश

कुशील इणकालमें, दोयचारित्रप्रकार जिनन्दजी । तेपिणसूधोनविपले, समकितकोआधार जिनन्द जी ॥ अजित ॥४॥ सोउपजेभविजीवने. शुभआलंवनपाय जिनन्दजो । आलंबनप्रभु तुमतणी, दशपुरविम्बसुहाय जिनन्दजो । अजित० ॥ ५॥ जसुनिरखत शुभभावना, उलसेत्यागविकार जिनन्दजी । इणकारणमें नितकरूं वन्दनपूजनसार जिनन्दजी ॥ अजित० ॥ ॥ ६ ॥ उगनोसे तीसेवदि, पौषदूज मनोहार जिनन्दजी । दिग्मंडलिकश्रीबालचन्द्र ने, निजनिधिद्यो श्रीकार जिनन्दजी अजित० ॥ ७ ॥

इतिश्रीअजितनाथजिन स्तवनसम्पूर्णम् ॥

पद्मप्रभु मुख पद्म विनिर्गत, त्रिपदी गणपति धार रे। द्वादसअंगरचे अति-सुन्दर, जगजन के हितकाररे ॥ पद्म० १ ॥ बीजथकीजिमबटबिस्तारा, तिमत्रिपदी-थोहोयरे। आगम सकलपरं पर जेहना, पञ्चांगी मुखजोयरे ॥ पद्म० २ ॥ सम-वायपञ्चमिल्यासबवस्तु, उपजे निज-पर्य्यायरे। तेहिजध्रुवनिज, स्थिति अनुसारे, विणसेकालकुंपायरे ॥ पद्म०३। इमेत्रिपदीगत सकल गेयछे, इणसंसार मझाररे। एमविमासी भविजनजोवो-सूत्रसहू सुविचाररे ॥ पद्म० ४ ॥ त्रिपदी-भाषक शिरपुरनगरे, शोभेश्रीजिनरायरे। प्रणमेंपदकज भावउलासे, श्रीबालचन्द्र सूरिरायरे ॥ पद्म० ५ ॥

इति पद्मप्रभस्वामी का स्तवन संपूर्णम् ॥

सहियरसुणियेरे पन्नवणा अधिकार चित्तमांधरियेरे एहसकलश्रुतसार । जीवाजीवप्ररूपणजेमां भेदअनेकविचार जेसरदहतां समकितथाय आनंदअङ्गअपार ॥ सहियर० १ ॥ पदछत्तीस प्रधानवखाण्या आर्यश्याम भगवान् पदपरम्पर तेविसपाटे धीरपुरुष गुणखाण ॥ सहि० २ ॥ समवायागछे चोथोअंग तेहतणोएउपांग । मनवचकाय एकत्रकरीने सुणिये दिलउच्छरङ्ग ॥ स० ३ ॥ सयउगनीसे पंचावनवरसे । श्रीबालचन्द्रसूरिराय। तसुमुखथीएसूत्रवंचाव्युं एवलामां हितकाज सहि० ४ ॥ गुहलीकीजे पापहरीजे वंदन विधीसुं कीजे नेमिकहेए गुहलीगातां मन वांछित फल लीजे ॥ सहि० ५ ॥

इति पन्नवणा गहुलि ॥

काशीस्थ श्रीमद्दिग्मंडलाचार्य श्रीबाल-
चन्द्रसूरिकृतअष्टमीकी स्तुतिः—

सुरेन्द्रवृन्दमानसो सत्सुभक्तिपूजितम्-
जिनेश्वरं दिनेश्वरं प्रतापराजिराजितम्।
शशांकलक्ष्मिशोभितं सुधाप्रभंमहेश्वरम्-
भजेहिलक्ष्मणात्जं प्रगेऽष्टमीदिनेमुदा ॥१॥

विभावमुक्तिजातसत् स्वकीयभावधारकाः
कुकर्मपाशमोचकाः जनप्रबोधकारकाः।
भवाब्धिमग्नतारकाः सुमार्गबोधिदर्शकाः।
जयंतुतेजिनोत्तमात्रिकालवर्तिनोभूषम्
॥ २ ॥

जिनेशवाक्यसंभवं गणेशबुद्धिगुम्फितम्-
सुहेतुयुक्तसंयुतं महार्थरत्नपूरितम् ।
अनन्तभावबोधकं कुवादिवादनाशकम्-
नमामिजैनमागमं सदात्मबोधकाम्यया:
॥ ३ ॥

अशेषविघ्ननाशिनी स्फुरत्प्रतापधारिणी-
प्रकृष्टरूपसंपदान्विता स्वभक्तकामदा ।
जिनेशपादसेवनापराहि शाशनामरी-
जिनेन्द्रशासनेरतान्जनानवत्वपापतः ॥४॥

अथश्री जिनलंछनस्तवन ॥

वृषभलंछन रिषभदेव, अजित लंछन हाथी ॥ संभवलंछन घोडलो, शिवपुरनोसाथो ॥ १ ॥ अभिनंदन लंछनकपि, क्रौंचलंछन सुमति ॥ पद्मलंछन पद्मप्रभु, विश्वदेव सुमति ॥२॥ सुपार्श्व लंछन साथियो, चंद्रप्रभलंछनचन्द्र ॥ मगरलंछन सुविधिप्रभु श्रीवत्स शीतलजिणंद ॥ ३ ॥ लंछनखड्गी श्रेयांस नो, वासुपूज्यनेम हिष ॥ सुअरलंछन विमलदेव भवियासेवोईश ॥ ४ ॥ सीचांणो जिनअनंत-

नो, वज्रलंछन श्रीधर्म ॥ शान्तिलंछन मृगलो, राखेधर्मनोमर्म ॥५॥ कुंथुलंछन वोकडो, अरजिननन्द्यावर्त ॥ घटलंछन मल्लिप्रभु, काछवो मुनिसुव्रत ॥ ६ ॥ नमिजिनने नीलोकमल, पयपंकज नमोय ॥ शंखलंछनप्रभुनेमजी दोशेउंचे अंघोय ॥ ७ ॥ पार्श्वनाथजोनेचरणसर्प, नीलवर्णसोहंत सिंहलंछन कंचनतनु, वर्द्धमानविख्यात ॥ ईणीपेरेलंछन चितवी, ओलखियो जिनराय श्रीमहिमाप्रभुसूरिनी. लक्ष्मीरतनसूरिराय ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीजिनलंनस्तवन सम्पूर्णम् ॥

## ॥ अथ श्रीआदिनाथजिनस्तवन ॥

मातामरुदेवानानन्द, देखीताहरीमूरति म्हारूंममलोभाणुंजी ॥ म्हारूंदिललोभा णुंजी॥ करुणानागर करुणांसागर

कायाकंचनवान ॥ घोरीलं छनपाउलेकोई धनुषपांचसेमान ॥ माता० १ ॥ त्रिगडे बे सीधर्मकहंता, सुनेपर्षदाबार ॥ योजनगा-मिनिवाणीमीठो, वरस तिजलधार॥माता० २ ॥ उर्वसीरूड़ो अपच्छराने रामाछेमन रंग ॥ पायेनेपुररणझण कांईकरतोनाटा रंग ॥ माता० ३ ॥ तूं हिजब्रह्मा तूं हिवि-धाता तूं हीजगतारनहार ॥ तुजसरिखोन-हि देवजगतमां, आंखड़ियां आधार ॥ माता० ४॥ तूं हीभ्राता तूं हीत्राताता तूं ही-जगतनोदेव ॥ सुरनर किन्नरवासुदेवाक-रतातुजपदसेवा ॥ माता० ५ ॥ श्रीसिद्धा-चलतीरथकेरी, राजारिष भजिनन्द ॥ की-र्त्तिकरे माणिक मुनिताहरी, टालोभवभव फंद ॥ माता० ६ ॥

॥ इतिश्रीआदिनाथजिनस्तवन सम्पूर्णम् ॥

# अथ श्रीपुण्डरिकस्वामीगणधर का स्तवन ॥

एकदिन पुण्डरिक गणधररेलाल, पूछे श्रीआदिजिनन्द सुखकारिरे॥ कहिये ते भवजलउतरोरेलाल पामिसपरमानन्द भववारिरे ॥ एक०१॥ कहेजिनइण गिरपांमशोरेलाल, ज्ञानअनेनिर्वाण जयकारिरे ॥ तीरथमहिमा वाधसेरेलाल, अधिकअधिक मण्डाण निरधारिरे ॥ एक० २ ॥ इमनिसुणीनेतिहां आवियारेलाल; घातीकर्मकरयादूर तमवारिरे ॥ पांचकोड़िमुनिसु परिवरयारेलाल; हुवासिद्धिहजूर भववारिरे ॥ एक० ३ । चैत्रीपूनमदिन किजियेरेलाल पूजाविविधप्रकार दिलधारीरे॥ फलप्रदक्षिणा काउसगारेलाल, लोगसथुईनमुकार नर-

नारिरे ॥ एक० ४ ॥ दशवीसतीसचालीस भलारेलाल, पंचास पुष्पनिमाल अतिसारिरे ॥ नरभवलाहोलिजियेरेलाल, जेमहोयज्ञानविशाल मनोहारीरे ॥ एक० ५ ॥

इति श्रीपुंडरिकस्वामीगणधर का स्तवन संपूर्णम् ॥

---

## अथ श्रीआदिनाथजिनवार्षिक पारणाका स्तवन ॥

यारससेलड़ो आदिजिनेश्वर कीयो पारणो ॥ आंकणो ॥ प्रथमजिनेश्वर कियोपारणो ॥ यारस० ॥ नाभिराया मरुदेवीकोनन्दा, मुखपुनमकोचन्दा ॥ वारवार-

मेरीयाहिवीनति, दरशनद्योनीजिनन्दारे ॥ यारस० १ ॥ घडाएकसोआठसेलडी, रस भरियासोनीका ॥ उल्लटभाव श्रेयांसव- होराव्या, मांडलोयाजबबूकारे ॥ यारस० ॥ २ ॥ देवदुंदुंभीबाजरही है, सोनैयाकी वर्षा ॥ बारमाससेकीयेपारणो, भूखगई सबतृषा ॥ यारस० ३ ॥ रिद्धिसिद्धिकारज मनोकामना, घरघरमंगलचार ॥ घर २ हर्षवधामणासकांइ, आखातीजतिव्हांररे ॥ यारस० ४॥ श्रीशत्रुंजेजेसिद्धक्षेत्रने, मा टोकहियेधाम ॥ श्रीसंघनामनोरथपुरो,पु- रोवंछितकामरे ॥ यारस० ५ ॥ धनुषपां- चसेमानमनोहर, कंचनवरणीकाय ॥ ला- खचोरासीपूर्वआउखो, नगरोविनिता रायारे ॥ यारस० ६ ॥ कर्म कुं काटण विघ्न निवारण, पूरोमोरोआश ॥ करजोड़ीसेवक

गुणगावें, रिषभदेव महाराजरे ॥यांरस०७॥
इति श्रीआदिनाथजिन वार्षिकपारणका
स्तवनसंपूर्णम् ॥

## अथ श्रीरिषभदेवजिनस्तवन ॥

आजरिषभघरआवे देखोमाई आज-
रिषभघरआवे ॥ टेक ॥ रूपमनोहर जग-
दानन्दन सबहीकेमनभावे ॥ देखो० १ ॥
केईमुक्ताफल थालविशाला केईमणिमा-
णिकलावे ॥ हयगयरथ पायककेइकन्या,
लेप्रभुवेगवधावे ॥ देखो० २ ॥ श्रीश्रेयांस
कुमरदानेश्वर इक्षुरसबहिरावे ॥ उत्तम-
दान अधिक अमृतफल साधुकीर्त्तिगुण-
गावे ॥ देखो० ३ ॥

इति श्रीरिषभदेवजिन स्तवन संपूर्णम् ॥

# अथ श्रीपार्श्वनाथजिनस्तवन ॥

आवो आवो पासजी मुजमलियारे, म्हारामनना मनोरथफलिया ॥ आवो० ॥ तारीमूरतिमोहनगारीरे, सहुसंघनेलागेछे-प्यारीरे, तुमने मोहिरह्यासुरनरनारी ॥ आवो० १ ॥ अलबेलिमूरतिप्रभुताहरीरे ताहरामुखड़ाऊपरजाउं वारीरे, नागनागणे नीजोड़ा बारी ॥ आवो० २॥ धन्य धन्य-देवाधिदेवारे, सुरलोककरेछेसेवारे, अम-नेआपोनेशिवपुरमेवा ॥ आवो० ३ ॥ तु-मेशिवरमणिना रसियारे, जईमोक्षपुरीमा वसियारे, म्हाराहृदयकमलमांवसिया ॥ आवो० ४ ॥ जेकोईपार्श्वतणा गुणगासेरे, तेनाभवभवना पातिकजासेरे, तेनासमकि-त निरमलथासे ॥ आवो० ५ ॥ प्रभुतेवि-

समां जिनरायरे मातावामादेवीनाजा-यारे, हमनेदरशनद्यो दीनदयाला ॥ आवे० ६ ॥ हुंतोलुलीलुलीलागुछुंपायरे, म्हाराहृदयमां हर्षनमायरे । एममाणिक विजयगुणगाय ॥ आवे० ७ ॥

इति श्रीपार्श्वनाथजिनस्तवन संपूर्णम् ॥

---

## श्रीसुपार्श्वनाथजी का स्तवन ।

सुपार्श्व जनेस्वर नित अलवेसर दर्शन आनन्द कारीरे, ॥ सु० १ ॥ शहर बडोदर से आये प्रभुजी भदैनी में दर्श दिखाये हैं जी, सु० ॥ २ ॥ इस मुरत के देखे सेती हृदय कमल हर्षाये हैं जी, सु० ॥ ३ ॥ सम्वत् उन्नीसे तिहत्तर वर्ष जेष्ट सुदी अष्टमी सुख पाये हैं जी सु० ॥ ४ ॥

गोत चोपड़ा देवी प्रसादे मुन्नो वीवो स्थापन कर सुख पाये हैं जी सु० ॥ ५ ॥ लाभ अर्ज करजोड़ि चर्णोंमें सीस नवाये हैं जो सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

---

तीरथ नी आसातना नविकरिये नविकरियेरे नविकरिये धूप ध्यान घटा अनुसरिये तरिये संसार ॥ ती० १ ॥ आसातना करतांथकां धनहाणो भूखा न मिलै अन्नपाणी काया वलि रोग भराणी आभवमा ऐमती० ॥ २ ॥ परभव परमाधामिने वसस्येपडसो वैतरणिनदीमाभलस्ये अग्नीने कुन्डै वलश्यै नहि शरणो कोय ती० ३॥ पूर्व निन्याणू नाथजो इहां आव्या साधूकेइ मोक्ष सिधार्‌या श्राव-

कपण स्वर्गसिधार्या जपतां गिरिनाम तो० ४ ॥ अष्टोत्तर सतकूट येगिरिठामे सौन्दर्य यशोधरनामें क्षिति मंडण कामुकका मै वलि सहजानंद ॥ तो० ५ ॥ महेंद्र ध्वज सर्वारथ सिद्ध कहिये प्रियंकर नाम ऐ-लहिए गिरि शीतल छायें रहिए नित्य करिये ध्यान ॥ तो० ६ ॥ पूजनिन्याणु कारनो प्रमें कीजै नर भवनो लाहो लीजै बलिदान सुपात्रे दीजे, चढ़ते परणाम ॥तो० ७॥ सेवनफल संसारमां करै लीला रमणो धन सुन्दरबाला । शुभवीरविनोद विशाला मङ्गल शिवपाल ॥ तो० ८ ॥ इति

---

## अथ श्रीशान्तनाथजीका स्तवन

आंगन कल्प फल्योरि हमारे माई

ओंऋद्धवृद्धसिद्धसुखसम्पति दायक श्री-
शांतिनाथ मिल्योरी ॥ह०॥ केशर चन्दन
मृगमद घोरी मां है बरास मिल्योरी ह०॥
पूजस्यूं श्रीशांतिनाथ जिन प्रतिमा
अलग उद्वेगटल्योरी॥ह०॥ शरणे राखु कृपा
निधि साहिव ज्यूं परिवो पल्योरी समय
सुन्दर कहै तुमरि कृपासुं अवरहिस्यूं
सोहे लौरी ॥ ह० ॥ इति ॥

# शुद्धिपत्र ।

| पृष्ठ | पंक्ति | | अशुद्धि | | शुद्धि |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | १२ | .... | युफ्फेहि | .... | पुफ्फेहि |
| ५ | ११ | .... | अ्रगारितत्तो | | अप्यगारिचतो |
| ११ | १० | .... | यनेमन पर्यव | | अने मनपर्यव |
| १२ | १२ | .... | मरुहेव्याजी | | मरुदेव्याजी |
| १३ | ६ | .... | षोले | .... | चोले |
| १७ | ४ | .... | वयठी | .... | वयठी |
| ,, | ८ | .... | ,, | .... | ,, |
| ,, | १२ | .... | ,, | .... | ,, |
| ,, | १५ | .... | ,, | .... | ,, |
| १८ | ४ | .... | ,, | .... | ,, |
| ,, | ८ | .... | ,, | .... | ,, |
| ,, | ८ | .... | त्रसला | .... | त्रिशला |
| २८ | ७ | .... | दूरग माया | .... | दूर गमाया |
| २८ | १५ | .... | वीजी | .... | बीजी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३० | ८ | .... | संगतनी | .... | संघतनी |
| ३३ | ३ | .... | प्रभुजोने | .... | प्रभुजीने |
| ३६ | १२ | .... | त्रित्रुवन | .... | त्रिभुवन |
| ३९ | १० | .... | प्रेभुजी | .... | प्रभुजी |
| ४० | ९ | .... | आम्याघणी | .... | आम्याघणी |
| ४० | १३ | .... | दुरक | .... | दुःख |
| ४० | १३ | .... | अनकन | .... | अनेक न |
| ४३ | १० | .... | बाहिनी | .... | बहिनी |
| ४४ | १५ | .... | महाबीस्त | .... | महावीर स्त० |
| ४७ | ४ | .... | प्रणमहुं | .... | प्रणम हुं |
| ४९ | ९ | .... | संदेशे | .... | संदशो |
| ४९ | ११ | .... | अन्यो | .... | आव्यो |
| ५१ | १ | .... | सिझाय | .... | सझाय |
| ५५ | १२ | .... | राणेपुर | .... | राणपुर |
| ५५ | १४ | .... | सुखकारि रे | .... | सुखकारिरे |
| ५९ | ८ | .... | आद० | .... | आदी० |
| ६० | ४ | .... | लल | .... | लाल |
| ६० | ७ | .... | पाच | .... | पांच |
| ६० | १० | .... | मे होरे | .... | मोहोरे |
| ६० | १२ | .... | सवत | .... | संवत |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ६५ | १ | .... | अेपमा | .... | उपमा |
| ७१ | ७ | .... | पार्श्वमाथ | .... | पार्श्वनाथ |
| ७२ | ९ | .... | अस्थ | .... | अथ |
| ७२ | १२ | .... | पंक्षी | .... | पक्षी |
| ७३ | २ | .. | ध्यांन | .... | ध्यान |
| ७८ | १ | .... | दूरोकरेजी | .... | दूरेकरेजी |
| ७८ | ६ | .... | पदजाका | .... | पदजीका |
| ७८ | ७ | .... | जिनु | .... | जिन |
| ८५ | १४ | .... | नेम हिप | .... | नो महिप |
| ८६ | १२ | .... | लं न | .... | लंछन |
| ८६ | १५ | .... | ममलोभा | .... | मनलोभा० |
| ८७ | १० | .... | सानाता | .... | ज्ञाता |
| ८७ | १२ | .... | सेव | .... | रोव |
| ८९ | २ | .... | पंचास | .... | पचास |
| ९० | ३ | .... | सोनीका | .... | सोने |
| ९३ | ३ | .... | लुलीलुली | .... | लरीलरी का |
| ९३ | ८ | .... | जनेस्वर | .... | जिनेश्वर |

॥ श्री विजयानन्द सूरिभ्योनमः ॥

# निवेदन ।

**सज्जनो !**

आज कल जैन साहित्य के प्रचार की बड़ी भारी आवश्यकता है खास कर हिन्दी भाषा में तो जैन साहित्य का बड़ा भारी अभाव सा हो रहा है । मारवाड़-मालवा-बंगाल-पंजाब यू० पी० में हिन्दी में ग्रन्थ न मिलने के कारण धार्मिक ग्रन्थों का रहस्य तक नहीं जान सकते यद्यपि गुजराती में बहुतसी पुस्तकें छपी हैं पर हिन्दी वाले उन से पूरा लाभ नहीं उठा सकते आवश्यकता थी कि कोई संस्था ऐसी स्थापित हो जो हिन्दी में जैन ग्रन्थों को प्रकाशित करे इसी त्रुटि को पूरा करने के वास्ते इस मंडल की स्थापना हुई और पंच प्रतिक्रमण जीव-विचार नवतत्व आदि अनेक पुस्तक प्रकाशित करता हुआ यह मंडल कार्य क्षेत्र को वढा रहा है पर काम करने वाले और संस्था दोनों की कमी के कारण जैसी चाहते हैं वैसी शीघ्रता से काम नहीं कर सकते ।

इस वास्ते सर्वसज्जनों से प्रार्थना है कि जो साहब इस मंडल को कार्य करने की सहायता दें वो उत्तम २ ग्रन्थों का हिन्दी भाषान्तर करके भेजें और दाता लोग दान में जी खोल कर

रुपये की सहायता करें जो कार्य शीघ्रता के साथ किया जा सके और पुस्तकें भी सस्ते मूल्य पर वेची जासकें अर्थात् कोई दानी बिना मूल्य बंटवावें तो और भी विशेष प्रचार हो सके।

१-जो धनी इस मण्डल को दान देंगे उनका धन्यवाद प्रकाशित किया जावेगा।

२-कागज महँगा मिलने के कारण किसी २ पुस्तक का मूल्य सूक्ष्म रूप से अधिक कर दिया है।

३-पुस्तक मंगाते समय कृपाकर पता आदि स्पष्ट लिखें।

निवेदक मन्त्रीः—

श्री आत्मानन्द जैन पुस्तकप्रचारक मंडल

नौघरा देहली,